स्मृतिशेष

चित्र भूषण श्रीवास्तव ‘विदग्ध’

विशेष

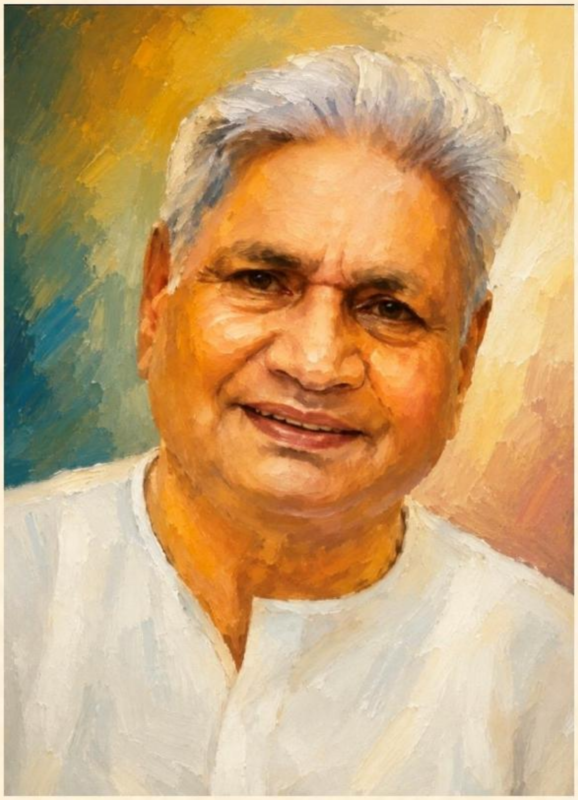

www.e-abhivyakti.com

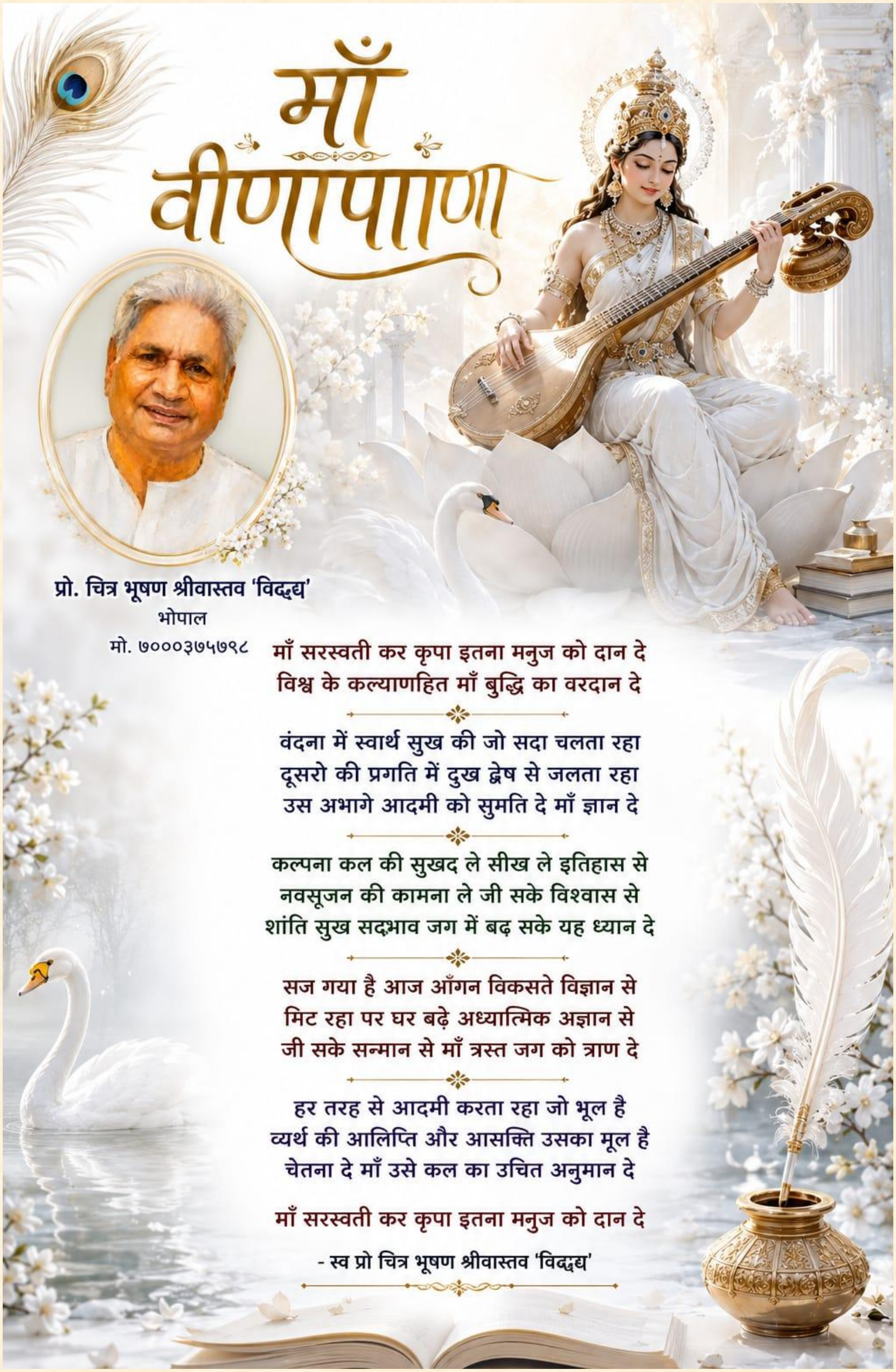

माँ वीणापाणि
प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'
भोपाल
मो. ७०००३७५७९८
माँ सरस्वती कर कृपा इतना मनुज को दान दे
विश्व के कल्याणहित माँ बुद्धि का वरदान दे
वंदना में स्वार्थ सुख की जो सदा चलता रहा
दूसरो की प्रगति में दुख द्वेष से जलता रहा
उस अभागे आदमी को सुमति दे माँ ज्ञान दे
कल्पना कल की सुखद ले सीख ले इतिहास से
नवसृजन की कामना ले जी सके विश्वास से
शांति सुख सद्भाव जग में बढ़ सके यह ध्यान दे
सज गया है आज आँगन विकसते विज्ञान से
मिट रहा पर घर बढ़े अध्यात्मिक अज्ञान से
जी सके सन्मान से माँ त्रस्त जग को त्राण दे
हर तरह से आदमी करता रहा जो भूल है
व्यर्थ की आलिप्ति और आसक्ति उसका मूल है
चेतना दे माँ उसे कल का उचित अनुमान दे
माँ सरस्वती कर कृपा इतना मनुज को दान दे
- स्व प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'

संपादकीय

शब्द-साधना का शताब्दी वर्ष : प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' की अक्षय विरासत

25 जुलाई 2026, यह तिथि केवल एक पुण्यस्मरण का अवसर नहीं है। यह एक ऐसे साहित्य-साधक के जीवन का स्मरण है, जिनकी प्रथम पुण्यतिथि और उनकी संभावित जन्मशती का भावपूर्ण संगम एक साथ उपस्थित हुआ है। यदि वे हमारे बीच होते तो इस वर्ष उनके जीवन का शताब्दी वर्ष आरंभ होता। नियति ने उन्हें शतायु होने का अवसर नहीं दिया, किंतु उन्होंने अपनी साधना से शब्दों को शतायु ही नहीं, कालजयी बना दिया। उनका जीवन भले 99 वर्षों तक सीमित रहा, पर उनकी रचनाएँ समय की सीमाओं से परे चली गई हैं।

प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' उन दुर्लभ साहित्यकारों में थे जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई द्वैत नहीं था। उन्होंने जो लिखा, वही जिया; और जो जिया, वही लिखा। आज जब समाज में शब्द और आचरण के बीच दूरी बढ़ती जा रही है, तब उनका जीवन "सादा जीवन, उच्च विचार" का जीवंत प्रमाण बनकर हमारे सामने खड़ा है। उनका सादापन बाहरी प्रदर्शन नहीं था; वह उनके चिंतन, व्यवहार, अध्ययन, अनुशासन और सेवा का स्वाभाविक विस्तार था। गीता के कर्मयोग को उन्होंने केवल अनूदित नहीं किया, उसे अपने जीवन में आत्मसात भी किया। यही कारण है कि उन्हें जानने वाले बार-बार कहते हैं, वे गीता को पढ़ते नहीं थे, गीता को जीते थे।

आज जब हम उनकी रचनाओं का अवलोकन करते हैं तो सहज ही अनुभव होता है कि उन्होंने किसी एक विधा या विषय तक स्वयं को सीमित नहीं रखा। कविता, गीत, दोहा, ग़ज़ल, निबंध, बाल साहित्य, शैक्षिक चिंतन, नैतिक साहित्य, भाषा-विज्ञान, संस्कृत ग्रंथों का काव्यानुवाद—हर क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने साहित्य को केवल सौंदर्यबोध का माध्यम नहीं माना; वह उनके लिए समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण और मनुष्य निर्माण का साधन था। यही कारण है कि उनके साहित्य में राष्ट्रीय चेतना है, भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का गौरव है, अध्यात्म की शीतल धारा है और मानवता की व्यापक संवेदना है।

विशेष रूप से संस्कृत के महान ग्रंथों, श्रीमद्भगवद्गीता, मेघदूतम् और रघुवंशम् का उनका हिंदी पद्यानुवाद हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में गिना जाना चाहिए। उन्होंने केवल भाषांतरण नहीं किया, बल्कि मूल काव्य के रस, लय और भाव-सौंदर्य को हिंदी में पुनः सृजित किया। आज जब संस्कृत से हिंदी में गुणवत्तापूर्ण काव्यानुवाद के उदाहरण सीमित हैं, तब उनका कार्य नए मानदंड स्थापित करता है। यह क्षेत्र अभी भी गंभीर शोध की प्रतीक्षा कर रहा है।

वास्तव में, प्रो. 'विदग्ध' का समग्र साहित्य विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के लिए एक विशाल संभावनाओं का क्षेत्र है। यह स्मरण अंक केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि एक शोध-यात्रा का प्रारंभ बने, यही हमारी आकांक्षा है। उनके साहित्य पर अनेक मौलिक शोध-विषय विकसित किए जा सकते हैं, जैसे—

- प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव के साहित्य में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय चेतना।
- प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव की कविताओं में छायावादी संवेदना एवं प्रकृति-दृष्टि।

- प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' के रचनाकर्म के आध्यात्मिक आयाम।
- संस्कृत से हिंदी काव्यानुवाद की परंपरा में प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव का योगदान : एक मीमांसात्मक अध्ययन।
- उनके बाल साहित्य में नैतिक शिक्षा और व्यक्तित्व निर्माण की अवधारणा।
- उनके शैक्षिक साहित्य में नवाचार, शिक्षाशास्त्र और मूल्यपरक शिक्षा।
- उनके काव्य में भारतीय संस्कृति, लोकमंगल और मानवीय मूल्यों का स्वरूप।
- उनकी गद्य रचनाओं का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श।

इन विषयों पर एम.फिल., पीएच.डी. तथा डी.लिट्. स्तर के गंभीर शोध न केवल उनके साहित्य को उचित स्थान देंगे, बल्कि हिंदी साहित्य के अध्ययन को भी समृद्ध करेंगे।

यह भी स्मरणीय है कि उन्होंने स्वयं अपने एक साक्षात्कार में युवा रचनाकारों को संदेश दिया था कि साहित्य में स्थायित्व तभी आता है जब रचना परिश्रम, परिपक्वता और बार-बार के आत्मसंपादन से गुज़रे। उनका यह विश्वास था कि "दीर्घजीवी साहित्य रचा जावे तो बेहतर। " यही वाक्य उनके अपने साहित्यिक जीवन का भी सबसे सटीक परिचय बन गया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि उनके साहित्य का समग्र संकलन, आलोचनात्मक संपादन, डिजिटलीकरण और अकादमिक मूल्यांकन किया जाए। उनकी अप्रकाशित पांडुलिपियाँ, पत्र, संस्मरण और अनुवाद सुरक्षित रखे जाएँ। विश्वविद्यालयों में उनके साहित्य पर संगोष्ठियाँ आयोजित हों, शोधवृत्तियाँ प्रदान की जाएँ तथा उनकी प्रमुख कृतियों को पाठ्यक्रमों में सम्मिलित करने की पहल हो। किसी भी साहित्यकार के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि यही होती है कि उसकी रचनाएँ नई पीढ़ियों तक पहुँचें और नए विमर्शों का आधार बनें।

यह स्मरण अंक उसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है। इसमें संकलित संस्मरण, शोध आलेख, समीक्षाएँ और श्रद्धांजलियाँ केवल अतीत का स्मरण नहीं, भविष्य की साहित्यिक जिम्मेदारी का उद्घोष हैं। हमारा विश्वास है कि आने वाले वर्षों में प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' का साहित्य नई पीढ़ी के शोधार्थियों, साहित्यकारों और पाठकों के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत सिद्ध होगा।

साहित्य जगत के देदीप्यमान नक्षत्र, वरिष्ठ कवि, अर्थशास्त्री और अद्वितीय शिक्षाविद स्वर्गीय प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' जी (23 मार्च, 1927 – 25 जुलाई, 2025) अपनी लेखनी और आदर्शों के माध्यम से सदैव हमारे बीच जीवंत हैं। 35 से अधिक पुस्तकों के प्रणेता विदग्ध जी ने कविता, निबंध, बाल साहित्य और विशेषकर संस्कृत महाकाव्यों (श्रीमद्भगवद्गीता, मेघदूतम, रघुवंशम) के हिंदी पद्यानुवाद में जो मानक स्थापित किए हैं, वे आने वाली पीढ़ियों के लिए पाथेय हैं।

उनकी प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर, 'ई-अभिव्यक्ति' पोर्टल द्वारा उनके विराट व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व पर केंद्रित इस विशेष वेब पत्रिका स्मृतिशेष चित्र भूषण 'विदग्ध' विशेष का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पावन अवसर पर हम समस्त विद्वानों, साहित्यकारों, शोधार्थियों एवं उनके स्नेहपात्रों से के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने आदरणीय विदग्ध जी के साहित्यिक योगदान, उनकी आध्यात्मिक, दार्शनिक, राष्ट्रीयता की दृष्टि या उनके प्रेरक जीवन से जुड़े संस्मरणों पर अपने शोधपूर्ण लेख, संस्मरण अथवा समीक्षात्मक आलेख हमें भेजकर अनुग्रहित किया है।

इसके अतिरिक्त -

- विदग्ध जी के काव्य संग्रहों (वतन को नमन, अनुगुंजन, स्वयंप्रभा, अंतर्ध्वनि, गजल संग्रह, आदि) की समीक्षा। (उनकी कई पुस्तकें किंडल पर शून्य मूल्य पर उपलब्ध हैं)
- संस्कृत कृतियों के उनके पद्यानुवाद की साहित्यिक विशेषताएँ।
- बाल साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान।
- उनके व्यक्तित्व के विविध आयाम: एक शिक्षाविद और मार्गदर्शक के रूप में।

संदर्भ स्वरुप उनसे सम्बंधित सामग्री उनकी रचनाएँ और विस्तृत परिचय 'ई-अभिव्यक्ति' पोर्टल www.e-abhivyakti.com, उनके ब्लॉग (pitashrikirachnaye.blogspot.com) तथा इंटरनेट पर हिंदी में उनका नाम सर्च करने पर भी उपलब्ध हैं।

दूरदर्शन द्वारा उन पर निर्मित फिल्म "एक व्यक्तित्व ऐसा भी" को यूट्यूब (YouTube) पर देखकर भी उनके जीवन की झलक पाई जा सकती है।

https://youtu.be/m2HpeDqoJho?si=Ml0ru_CJbrK3znSR

हमें विश्वास है कि आपका आत्मीय लेखन इस अंक को और अधिक संग्रहणीय यथा महत्वपूर्ण बनाएगा।

उनकी स्मृति को हमारी विनम्र श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके शब्दों की लौ को आगे बढ़ाएँ। शरीर काल के अधीन होता है, पर शब्द नहीं। इसलिए प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' आज भी अपने साहित्य, अपने आदर्शों और अपने मौन कर्मयोग के माध्यम से हमारे बीच उपस्थित हैं, और रहेंगे।

उनकी जन्मशती के इस भावपूर्ण वर्ष में उन्हें शत-शत नमन।

हेमन्त बावनकर

संस्थापक संपादक (ई-अभिव्यक्ति), पुणे www.e-abhivyakti.com

अनुक्रमणिका

शब्द-साधना का शताब्दी वर्ष : प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव ‘विदग्ध’ की अक्षय विरासत 3

चित्र भूषण श्रीवास्तव जी की आजीवन उपलब्धियों का लेखा-जोखा इ-मीडिया विशेषांक 7

शिक्षा, प्रशिक्षण और हिंदी साहित्य को समर्पित व्यक्तित्व - श्रद्धेय: डॉ. चित्रभूषण श्रीवास्तव जी 10

आदरांजलि - स्मृतिशेष श्री चित्रभूषण जी श्रीवास्तव 13

Remembering Prof. Chitra Bhushan Srivastava 'Vidagdha' on his First Death Anniversary 14

संस्मरण - हमारे पापा जी : सादा जीवन, उच्च विचार की जीवंत मिसाल 16

दीर्घ जीवी साहित्य रचा जावे तो बेहतर 18

युग का बदलाव 20

देश हमारा 21

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' ☆ व्यक्तित्व एवं कृतित्व 22

“सरस्वती पुत्र प्रोफ़ेसर चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध” 26

स्मृतिशेष प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव.. गीता को जीते हुये, बिदा हुए साहित्यकार 29

स्मृति शेष शिक्षाविद, साहित्यकार विदग्ध जी 37

स्मृतिशेष प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी विशेष – शब्द पुष्पांजलि 39

चित्र भूषण श्रीवास्तव जी की आजीवन उपलब्धियों का लेखा-जोखा ट्रू-मीडिया विशेषांक

विनोद कुमार विक्की

ओमप्रकाश जी के संपादन में दिल्ली से प्रकाशित होने वाली राष्ट्रीय मासिक पत्रिका "ट्रू मीडिया " का हर अंक धरोहर अंक व बेमिसाल होता है क्योंकि प्रत्येक अंक किसी ना किसी साहित्य विभूषण को समर्पित होता है।

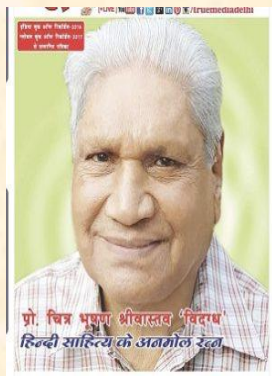

(**ट्रू मीडिया** द्वारा **प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'** पर केंद्रित विशेषांक का आवरण पृष्ठ)

इसी कड़ी में दिसंबर अंक वर्तमान साहित्य आकाश के धूमकेतु मंडला (म.प्र.) के प्रो.चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' पर केन्द्रित है।

अपने संपादकीय में ओमप्रकाश जी ने भारतीय संस्कृति में मंडला की ऐतिहासिक गरिमा की बखान करते हुए वर्तमान की साहित्यिक योगदान का सुन्दर व सजीव चित्रण किया है।

चित्र संग्रह पृष्ठ पर प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव स्निग्ध जी के परिवार के साथ वाली तस्वीरों के साथ सम्मानित होने वाले यादगार क्षणों को एवं रची गयी रचना संग्रह की तस्वीरों को प्रदर्शनी द्वारा उनके सामाजिक व साहित्यिक गतिविधियों को जीवंत करने की शानदार कोशिश की गई है।

नर्मदा के तट से जीवन की प्रारंभिक शुरूआत करने वाले विदग्ध साहब के साहित्यिक योगदान के साथ साथ समाजसेवी योगदान को उनकी जीवन गाथा में समाहित करने की भरसक कोशिश की गई है।

डा॰ अभिजात कृष्ण त्रिपाठी जी की प्रो. श्रीवास्तव जी से हुई बातचीत विशेषांक का मुख्य आकर्षण है।

चित्र भूषण श्रीवास्तव जी द्वारा रचे गए दोहों पर आचार्य संजीव वर्मा सलिल जी ने सुंदर समीक्षा की है।

चित्र भूषण श्रीवास्तव जी द्वारा किए गए गायत्री मंत्र के हिन्दी अनुवाद को रमेश पाठक ने पत्रिका के माध्यम से पाठकों तक पहुँचाने का सुन्दर प्रयास किया है। अखिलेश्वरानंद गिरी जी ने भी प्रो.साहब के भागवत अनुवाद पर भी रोशनी डाली है।विभिन्न मंत्रों के हिन्दी अनुवाद को भी एक पृष्ठ में स्थान दिया गया है। जो चित्र भूषण जी के आध्यात्मिक बोध को परिलक्षित करता है।

गार्गीशरण मिश्र मराल,रमेश श्रीवास्तव चातक,आचार्य भगवत दूबे,अमरेन्द्र नारायण, स्मृति शुक्ल,शरद नारायण खरे, सुधीर सिंह सुधाकर आदि द्वारा चित्र भूषण श्रीवास्तव जी के विचार, व्यवहार, रचनात्मकता, समरसता व सामाजिकता पर केन्द्रित आलेख श्रीवास्तव जी के व्यक्तित्व को खुली किताब की तरह प्रतिबिम्बित करता है।

चित्र भूषण जी की सुपुत्री श्रीमती विभा निगम द्वारा अपने पिता के प्रति उद्गार हो या नाती स्वप्निनल निगम का अपने नाना के लिए लिखा गया "हमारे नाना हमारे गूगल" स्निग्ध साहब की विद्वता एवं आत्मीयता दोनों को अभिलक्षित करता है।स्नेहिल निगम की कविता" मेरे नाना प्यारे नाना" में नाना के प्रति अगाध प्रेम दर्शाता है।

रचना संसार स्तम्भ के तहत चित्र भूषण श्रीवास्तव जी के साहित्यिक,सांस्कृतिक व आध्यात्मिक रचनाओं का समावेश कर पत्रिका ने श्रीवास्तव साहब को विशेष सम्मान से नवाजा है।

इसमे कोई अतिश्योक्ति नही कि सरस्वती पुत्र चित्र भूषण श्रीवास्तव जी का पुरा परिवार शिक्षित व साहित्य सेवा को समर्पित है।सनद रहे कि चित्र भूषण श्रीवास्तव जी के सुपुत्र साहित्यकार सह व्यंग्यकार विवेक रंजन श्रीवास्तव जी भी लंबे समय से उत्कृष्ट रचनाओं के माध्यम से साहित्य की सेवा करते आ रहे है।हालांकि इस विशेषांक में विवेक जी का पिता के प्रति उद्गार या आलेख का ना होना विशेषांक की पूर्णता का कमजोर पक्ष दर्शाता है।

ड्रू मीडिया संपादकीय टीम ने महज 44 पेज में चित्र भूषण श्रीवास्तव जी के संपूर्ण जीवन वृंत को समेटने का अद्भुत व सराहनीय प्रयास किया है।

चित्र भूषण श्रीवास्तव जी के पाठकों के लिए यह धरोहर विशेषांक निःसंदेह पठनीय व संग्रहणीय बन पड़ा है।

यह एक शोध पत्रिका के रूप में उपयोगी है

प्रो स्व चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी के साहित्य पर शोध कार्य के संभावित विषय –

- प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव के साहित्य में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय चेतना।
- प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव की कविताओं में छायावादी संवेदना एवं प्रकृति-दृष्टि।
- प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' के रचनाकर्म के आध्यात्मिक आयाम।
- संस्कृत से हिंदी काव्यानुवाद की परंपरा में प्रो. श्रीवास्तव का योगदान : एक मीमांसात्मक अध्ययन।
- उनके बाल साहित्य में नैतिक शिक्षा और व्यक्तित्व निर्माण की अवधारणा।
- उनके शैक्षिक साहित्य में नवाचार, शिक्षाशास्त्र और मूल्यपरक शिक्षा।
- उनके काव्य में भारतीय संस्कृति, लोकमंगल और मानवीय मूल्यों का स्वरूप।
- उनकी गद्य रचनाओं का सामाजिक एवं सांस्कृतिक विमर्श।
- इन विषयों पर एम.फिल., पीएच.डी. तथा डी.लिट्. स्तर के गंभीर शोध न केवल उनके साहित्य को उचित स्थान देंगे, बल्कि हिंदी साहित्य के अध्ययन को भी समृद्ध करेंगे।

समीक्षक - विनोद कुमार विक्की

पुस्तक मित्र लाइब्रेरी – एक प्रयोग

शिक्षा, प्रशिक्षण और हिंदी साहित्य को समर्पित व्यक्तित्व - श्रद्धेयः डॉ. चित्रभूषण श्रीवास्तव जी

जब कोई व्यक्ति अपना संपूर्ण जीवन भाषा, शिक्षा और संस्कृति की सेवा में समर्पित कर देता है, तो वह केवल शिक्षक नहीं रहता, वह एक युग की चेतना बन जाता है। ऐसा ही एक नाम है प्रोफेसर चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'। आपने अपनी जीवन यात्रा में शिक्षाशास्त्री, साहित्यकार और आध्यात्मिक साधक के रूप में जो योगदान दिया, वह शिक्षा, प्रशिक्षण एवं हिंदी जगत के लिए अमूल्य धरोहर है।

प्रोफेसर चित्र भूषण श्रीवास्तव जी का जन्म 23 मार्च 1927 को हुआ एवं गोलोकवास 25 जुलाई 2025 को हुआ। प्रोफेसर श्रीवास्तव जी केवल रचनाकार नहीं, एक कुशल शिक्षाविद भी थे। आपने शिक्षा प्रशिक्षण विभाग में प्राध्यापक, प्राचार्य और संचालक जैसे उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। राज्य और केंद्र सरकार के शिक्षण संस्थानों में रहकर वे अनेक समितियों में सलाहकार और महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह करते रहे।

जब मैं सन् 1986 में शा. प्रांतीय शिक्षण महाविद्यालय, जबलपुर, म. प्र. में एम. एड. की छात्रा थी, तब आपके कुशल निर्देशन एवं नेतृत्व में ही एम. एड. शोध प्रबंध विषय का चयन किया गया था। उसी वर्ष आप सेवानिवृत्त हुए थे, अतः मुझे आपका सानिध्य लाभ का अवसर भी प्राप्त हुआ। आप मेरे पिताश्री, शिक्षाविद् साहित्यकार, समाजसेवी, संस्थापक प्राचार्य पंडित हरिकृष्ण त्रिपाठी जी के आत्मीय एवं अत्यन्त प्रशंसक थे। उनके दीक्षितपुरा, जबलपुर निवास पर भेंट करने भी पहुँचते थे, जिससे मुझे भी दर्शन एवं सानिध्य लाभ मिल जाता था।

आपकी शिक्षा-चेतना का मूल मंत्र था भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का निर्माण। हिंदी शिक्षण योजना और केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान जैसे संस्थानों का उद्देश्य भी यही रहा है कि हिंदी न जानने वाले कर्मचारियों को हिंदी सिखाकर प्रशासन और समाज को जोड़ा जाए। प्रोफेसर श्रीवास्तव जी ने इसी दिशा में पाठ्यक्रम निर्माण, शिक्षक प्रशिक्षण और भाषा-प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मार्गदर्शन किया।

साहित्य के क्षेत्र में प्रोफेसर श्रीवास्तव जी बहुआयामी रचनाकार थे। उन्होंने निबंध, भाषा विज्ञान और विश्लेषण पर उत्कृष्ट लेखन किया। उनकी कविताओं में प्रकृति-निरीक्षण और राष्ट्रीय भावधारा का समन्वय मिलता है। खड़ी बोली में उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य की न्यूनता को पूरा करने वाली

मानी जाती हैं। आपके लेखन में भाषा की सरसता और चित्रात्मकता का प्रमाण मिलता है। उन्होंने हिंदी नवजागरण साहित्य के इतिहास को भी अपनी लेखनी का विषय बनाया। आपके साहित्यिक लेखन में आध्यात्मिक ज्ञान और सांस्कृतिक चेतना का उच्च स्तर दिखाई देता है। यह चेतना उन्हें केवल साहित्यकार नहीं, एक संस्कृति-साधक बनाती है।

20वीं सदी के उत्तरार्ध में भाषा-प्रौद्योगिकी का महत्व बढ़ा। प्रोफेसर श्रीवास्तव जी ने विभिन्न विश्वविद्यालयों के लिए बी. ए., एम. ए., एम. एड., एम. फिल. और पीएच. डी. स्तर पर भाषाविज्ञान के प्रश्नपत्र निर्माण और शोध-प्रबंध मूल्यांकन का कार्य किया। शिक्षण-प्रशिक्षण कौशल के विकास पर विशेष जागृति लाई। हिंदी शिक्षण में संचार कौशल, समूह कार्य, युग्म कार्य और भिन्न-भिन्न शिक्षार्थियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर पाठ योजना निर्माण उनके शिक्षाशास्त्र का हिस्सा था।

उनका माइक्रो टीचिंग का दृष्टिकोण आज भी बी. एड. और एम. एड. पाठ्यक्रमों में प्रासंगिक है।

उन्होंने संस्थागत शैक्षणिक सत्यनिष्ठा पैनल, छात्र कल्याण, प्रवेश समिति, बोर्ड ऑफ स्टडीज और शोध समिति जैसे अनेक पदों पर रहकर अकादमिक नीति को आकार दिया। उनका मानना था कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह अनुशासन, नैतिकता और सामाजिक सरोकार से जुड़ी हो। आप केंद्रीय विद्यालय-1, जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य एवं शा. प्रांतीय शिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्य, प्राध्यापक एवं जूनियर कॉलेज सरायपाली अब छत्तीसगढ़ के भी संस्थापक प्राचार्य रहे हैं।

आपको 'सरस्वती पुत्र' भी कहा जाता था। उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था—शिक्षा विशेषज्ञ, सरल सहज किंतु दृढ़, क्रियाशील व ऊर्जस्वी, अध्ययनशील और परम ज्ञानवान। वे अक्षर साधक और साहित्य सेवी के रूप में न केवल प्रतिष्ठित थे, बल्कि अनेक पीढ़ियों के रचनाकारों के लिए आदर के पात्र और प्रेरणा स्रोत बने। उनकी आध्यात्मिक ज्ञान और सांस्कृतिक चेतना ने उन्हें शिक्षक से गुरु के स्तर पर स्थापित किया।

आज जब हिंदी को वैश्विक मंच पर ले जाने की बात होती है, तो प्रोफेसर श्रीवास्तव जी जैसे लोगों का स्मरण आवश्यक हो जाता है। केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान और राजभाषा विभाग आज भी उनके दिखाए मार्ग पर हिंदी शिक्षण और प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं। आपके काव्य संग्रह अनुगुंजन, स्वयं प्रभा, अंतर्ध्वनि_, अनूदित ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता, रघुवंश, मेघदूत का हिंदी काव्य अनुवाद, तथा नैतिक शिक्षा, आदर्श भाषण कला_, _कर्मभूमि के लिये वरदान* आदि कृतियाँ प्रकाशित हुईं।

इसके साथ ही अनेक समसामयिक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में गद्य एवं पद्य की विभिन्न विधाओं में आपकी लेखनी चलती रही।

प्रोफेसर श्रीवास्तव जी ने अपने जीवन में भाषा को प्रशासन, शिक्षा और संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया। आपका जीवन यह सिद्ध करता है कि शिक्षा, प्रशिक्षण और साहित्य अलग-अलग क्षेत्र नहीं, बल्कि एक ही साधना के तीन स्वरूप हैं। उन्होंने शब्द को साधना बनाया, कक्षा को मंदिर और छात्र को शिष्य माना। आपके 99 वर्षीय जीवन में अनुशासन, निष्ठा और भाषा-प्रेम आज भी हम सभी के लिए प्रेरणा है। हिंदी साहित्य और शिक्षा जगत उन्हें सदैव 'विदग्ध' के रूप में स्मरण करेगा—वह विदग्ध जो शब्दों से समाज को गढ़ता रहा।

श्रद्धेय डॉ. चित्रभूषण श्रीवास्तव जी, आपकी साधना कोटि-कोटि नमन। आपकी लेखनी और शिक्षण की लौ आज भी हिंदी जगत को प्रकाशित कर रही है। आज भी हिंदी के विदग्ध साधक, प्राचार्यश्री चित्रभूषण श्रीवास्तव जी को उनके शिष्य-विद्यार्थी स्मरण करते हैं।

डॉ. मुकुल तिवारी

एम. एस-सी. (रसायन शास्त्र), एम. एड., एम. ए. (हिंदी साहित्य), पीएच. डी. (रसायन शास्त्र)

प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, रसायन शास्त्र, प्रभारी - प्रयोजन मूलक हिंदी

पं. बालमुकुंद त्रिपाठी मार्ग, दीक्षितपुरा, जबलपुर, म. प्र.

आदरांजलि - स्मृतिशेष श्री चित्रभूषण जी श्रीवास्तव

उनके प्रथम दर्शन मुझे उनके ही निवास पर हुए। उनके पुत्र श्री विवेक रंजन जी से परिचय होने पर उनके निवास पर पहुँचा तो वे बाहर बगीचे में कुर्सी पर पुस्तक पढ़ते हुए मिले। मुझे न जानते हुए भी उन्होने इस प्रकार बात की जैसे वर्षों से जानते हों। पहले ही परिचय में उनका यह अपनत्वपूर्ण सहज व्यवहार मुझे अंदर तक प्रभावित कर गया। इसके बाद मैं जब भी उनसे मिला वे कुछ न कुछ पढ़ते हुए मिले। विवेक जी ने बताया कि नब्बे वर्ष की आयु में उनका लेखन कार्य भी जारी है। एक दिन उनके बीमार होने पर मैं और श्री सुरेश पटवा जी उन्हे देखने गये, वे सो रहे थे। उनके आराम में व्यवधान न हो, इस उद्देश्य से हम लोग बैठक में आ गये, तभी विवेक जी ने हमें उनकी लिखी (हिंदी पद्यानुवाद एवं उसके भावार्थ सहित) पुस्तक श्री भग्वद्गीता भेंट की। घर आकर मैनें मूल श्लोक छोड़कर पद्यानुवाद एवं भावार्थ का अध्ययन किया और अपनी बुद्धि अनुसार गीता ग्रंथ को जितना समझ सकता था उतना समझा भी। लेकिन इसके अलावा जो बात समझ आई कि भग्वदगीता जैसे दर्शन का जो व्यक्ति भावार्थ सहित पद्यानुवाद करने की क्षमता रखता हो, उसकी विद्वता का क्या कहना। यह वही व्यक्ति कर सकता है जो गीता दर्शन को निज जीवन में उतार चुका हो। बाद में गीता पर ही उनकी लिखी एक पुस्तक और देखने में आई जिसमें हिंदी व अँग्रेजी भावार्थ सहित पद्यानुवाद किया गया था। यह उनके आचरण में दृष्टिगोचर होता था। एक बार उनके फिसल कर गिर जाने से उनके कूल्हे की हड्डी टूट जाने के कारण उन्हे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। मैं और श्री सुरेश पटवा जी उन्हे देखने अस्पताल पहुँचे। विवेक जी कुछ आवश्यक व्यवस्थाओं के लिये अपने घर गये हुए थे। हमारा सामना सीधे पापाजी (विवेक जी के साथी होने के कारण हम उन्हे पापा जी ही कहते थे) से हुआ, उन्होने बिस्तर पर पड़े- पड़े हँस हमारा स्वागत किया, और इतनी तकलीफ में भी सहज बने रहे। उन्होने उनकी परिचर्या में रत विवेक जी के साले, जो आई जी पुलिस पद से रिटायर हुए थे, से हमारा परिचय भी कराया। यह सब इतने सहज भाव से होता रहा मानो कुछ हुआ ही ना हो। एक बार मुझे फिर महसूस हुआ कि भग्वदगीता को उन्होने पढ़ा ही नहीं बल्कि उसे जीवन में उतारा भी है; एकदम निस्पृह भाव, अहंकार व आडम्बरमुक्त जीवन व समाज के प्रति संवेदनशीलता उनका जीवन आदर्श रहा।

एक स्थान पर उन्होने गीताश्लोक उद्धृत करते हुए लिखा है-

"न हि ज्ञानेन सदृश्यंपवित्रमिहि विद्यतो। संसार में ज्ञान के सदृश्य अन्य कुछ पवित्र नहीं है। मैं भी इसी भाव से इस पवित्र साहित्य सेवा में रत हूँ।" यह जो उन्होने लिखा वह हमने देखा है; वे सदैव पढ़ते हुए दिखते थे। साहित्यिक, शैक्षिक विषयों पर विभिन्न विधाओं पर लगभग बीस पुस्तकों का सृजन कर वे समाज को ज्योति दिखाते रहे।

वे सच्चे अर्थों में कर्मयोगी और ज्ञानयोगी थे। वे जीवनपर्यंत हमारे प्रेरणास्रोत रहेंगे।

शारदा दयाल श्रीवास्तव, भोपाल

Remembering Prof. Chitra Bhushan Srivastava 'Vidagdha' on his First Death Anniversary

Dr S K Mishra urtript

His literary works and educational vision continue to inspire

July 25 marks the first death anniversary of Prof. Chitra Bhushan Srivastava, widely revered as 'Vidagdha,' a towering figure in Hindi literature and education. Though his passing occurred a few months shy of his 100th birthday, his profound ideas, ethical framework, and significant literary output continue to serve as guiding lights for future generations.

Prof. 'Vidagdha' lived through an era of immense transformation in India, from the shadows of colonial rule to the dawn of independence and its subsequent emergence as a global power. His life journey mirrored the nation's progress, witnessing the transition from an era of foreign manufactured goods to India's advancements in space exploration and the advent of artificial intelligence, making his literary works a vibrant chronicle of modern Indian consciousness.

A Life of Profound Scholarship and Humility

Despite his considerable intellectual achievements, Prof. 'Vidagdha' was equally characterized by his deep humanity. In a contemporary landscape often marked by self-promotion, he embodied a quiet dedication to his craft. He lived by the principle of 'simple living and high thinking,' a testament to his approach of listening more than speaking, writing with scholarly rigor, and maintaining an unyielding curiosity for knowledge until his final days.

His perspective on translation was particularly insightful:

Translation is not merely an exchange of words between two languages; it is a bridge that connects two cultures and souls.

— Prof. Chitra Bhushan Srivastava 'Vidagdha'. This philosophy underscored his belief in the power of language to foster understanding and connection across diverse communities.

'Maa Veenapani': A Cultural and Humanistic Vision

Prof. 'Vidagdha's' revered invocation, 'Maa Veenapani,' extends beyond a simple prayer; it functions as a powerful cultural and humanistic manifesto. His supplications were not for personal gain but for collective wisdom, societal harmony, and global peace. His poetry reflects a deep sense of patriotism devoid of animosity, a spirituality that is engaged rather than passive, and a compassion that is resolute rather than yielding.

Mastery in Verse Translation

A significant highlight of his literary legacy is his masterful verse translations of Sanskrit classics into Hindi. His renditions of seminal works such as The Bhagavad Gita, Meghadutam, and Raghuvansham were lauded for meticulously preserving the original rhythm, aesthetic depth, and very soul of the texts. This exceptional skill earned him critical acclaim, with scholars describing his translation prowess as 'Parakaya Pravesh,' signifying a complete transmigration of spirit into another form.

Literary Contributions and Recognition

Prof. 'Vidagdha's' prolific output includes over 40 books that span various genres, including poetry, essays, children's literature, and philosophy. His significant contributions to Hindi literature and education were recognized with prestigious honors, including the national 'Gargi Award' by the Bharatiya Bhasha Parishad, New Delhi, and the M.P. Sahitya Akademi Award.

Pioneering Educational Leadership

As an eminent educationist, Prof. 'Vidagdha' played a crucial role in shaping not only institutions but also the characters of countless students. He served as the Founder Principal of Kendriya Vidyalaya No. 1, Jabalpur, and established the Junior College in Saraipali. Thousands of his former students now occupy distinguished positions globally, in countries like the US, UK, and Dubai, carrying forward the values he instilled.

A Call for Scholarly Exploration

There is a vital imperative for academic institutions and universities to undertake rigorous research into Prof. 'Vidagdha's' extensive literary corpus. An in-depth exploration of his multifaceted contributions, from his engagement with Chhayavadi aesthetics to his innovative methodologies in Sanskrit-Hindi poetic translation, would not only honor his enduring legacy but also significantly enrich contemporary Indian literary scholarship and understanding.

- **Dr S K Mishra urtript, Hyderabad**

संस्मरण - हमारे पापा जी : सादा जीवन, उच्च विचार की जीवंत मिसाल

विभूति, प्रकाश खरे

पूज्य पापा जी को देवलोक गए एक वर्ष बीत गए प्रत्येक दिन उनकी याद में ही निकला है। उनकी यादें लिखने लगूँ तो पूरी किताब लिख जाए पर पापा की कुछ खास बातों का जिक्र यहाँ कर रही हूं।

विभूति, प्रकाश खरे

पापा जी अर्थ शास्त्र, हिन्दी और संस्कृत में पोस्ट ग्रेजुएट रहे तो जाहिर सी बात है कि इन विषयों में उनकी जानकारी बहुत अच्छी थी लेकिन इन विषयों के अलावा उनकी इंग्लिश विषय की जानकारी और फ्लूएंसी से इंग्लिश बोलने की कला उनको खास बनाती थी। इतिहास में उनकी विशेष रुचि थी हर शहर का इतिहास, प्रसिद्ध त्यौहार और व्यंजन उनको मुँह जुबानी याद थे, घूमने के बहुत शौकीन रहे हैं हमारे पापा, मुझे याद है जब भी हम लोग कहीं घूमने जाते पापा से उस स्थान की जानकारी लेना और उनके साथ अपने अनुभव डिस्कस करना हम सब को बहुत अच्छा लगता था।

खाने के शौकीन होने के बावजूद उनकी जीवन चर्या बहुत स्वास्थ्य, निश्छल और अनुशासित रही।

"सादा जीवन उच्च विचार "उनके जीवन का मूल मंत्र रहा है। उनके बारे में सबका यही कहना था कि वो गीता को ही जीते हैं इसलिए उनके द्वारा गीता ग्रंथ का हिंदी अनुवाद इतना सरल तरीके से किया गया है हर इंसान उसे पढ़ कर उसकी सीख को आत्मसात कर सकता है।

पापा को जानने वाला हर शख़्स यहाँ तक कि उनके डॉ का भी यही कहना था कि अंकल जी सेंचुरी बनाएंगे, हम सब परिवार के सदस्य तो उनका 100वाँ जन्मदिन मनाने के लिए बहुत उत्साहित थे लेकिन भगवान ने उनके जन्मदिन के शतक का समारोह मनाने के लिए उनको अपने पास बुला लिया।

अपने 99वर्षों के जीवन में उन्होंने जो गौरवमयी उपलब्धियां प्राप्त की है वो अतुलनीय है और हमारे परिवार की अगली पीढ़ी के लिए प्रेरणा और मार्गदर्शन भी है।

उनकी सात्विक सीख और स्नेह भरा आशीर्वाद हर पल हमारे साथ है। हम कभी अकेले नहीं है, ना ही परेशानियों का हमें डर है, हमारे सिर पर पापा जी का आशीष भरा हाथ है। उनकी बेटी दामाद होने पर हमको गर्व है, हर जन्म हमें आप ही पापा के रूप में मिले बस यही प्रार्थना है।

शत शत नमन 🙏

विभूति प्रकाश (बेटी, दामाद)

पुणे

(पौत्र अमिताभ जब यू एस छुट्टी मनाकर लौट रहा था तो उसे आशीर्वाद देते हुए)

दीर्घ जीवी साहित्य रचा जावे तो बेहतर

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

अपनी प्रशंसा अच्छी नही मानी गयी है. यही कारण है कि महाकवि कालिदास का भी कोई वास्तविक परिचय उपलब्ध नहीं है. जहां तक मेरे संक्षिप्त परिचय की बात है, मेरा जन्म १९२७ में हुआ. मैने आजादी से पहले का भारत देखा है, स्वाधीनता आंदोलन में किसी न किसी तरह भागीदारी की है. मण्डला के अमर शहीद स्व उदय चंद जैन न केवल मेरे सहपाठी थे वरन स्कूल में मेरे साथ एक ही बैंच पर बैठा करते थे. आजादी के बाद मैने देखा है कि जिस भारत में एक सुई भी मेड इन इंगलैंड आती थी वहां से आज चंद्रमा तक राकेट जा रहे हैं. मैने लालटेन युग जिया है, और आज मेरे नाती, पोते दुनिया में न्यूयार्क, दुबई, हांगकांग में हैं, मैं उनके साथ विदेशों में अनेक जगह हो आया हूं. शिक्षा जगत ने मुझे यह सुअवसर दिये कि मैने पीढ़ियो का निर्माण किया है. साहित्य जगत ने मुझे सेवानिवृति के बाद भी आज तक लगातार कुछ न कुछ नया रचने, लिखने अध्ययन करने की प्रेरणा दी है.

बाल्यकाल में ही हम मित्रों ने नवयुग पुस्तकालय की स्थापना की थी. मण्डला के पढ़े लिखे परिवार होने के कारण मेरे पिताजी के पास लोग जिले में स्वातंत्र्य साहित्य के लिये संपर्क करते थे. मुझे अध्ययन के प्रति बचपन से ही लगाव था. संस्कृत साहित्य में मुझे आनन्द आता था. बस इस तरह साहित्य से लगाव बढ़ता गया.

स्कूल के दिनो में मैं हाकी बहुत अच्छी खेला करता था. नये नये स्थान घूमना, किताबें पढ़ना, गार्डनिंग मेरी साहित्येतर रुचियां रही हैं.

छंद बद्ध काव्य मेरी सबसे पसंदीदा विधा है. चांद व सरस्वती में १९४६ में मेरी कवितायें छपी थीं. आज भी कविता लिख कर मुझे नई उर्जा मिलती है. संस्कृत नई पीढ़ी नही पढ़ रही हे, जबकि गीता जैसे वैश्विक ग्रंथ संस्कृत में ही हैं, इसलिये मैंने हिन्दी में प्रायः प्रमुख संस्कृत ग्रंथो के अनुवाद करने की ठानी, और इस तरह काव्य अनुवाद मेरी विधा बन गई. महाकवि कालिदास का मेघदूतम विश्व का अप्रतिम श्रंगार रस का काव्य है, इसमें विरह की वेदना और श्रंगार का अद्बुत सौंदर्य भी है, मैंने इसका श्लोकशः हिन्दी काव्य अनुवाद किया है, मुझे साहित्य से सुकून मिला. आत्म केंद्रित रहकर मैं साहित्य सेवा में आजीवन लगा रहा हूं. सेवानिवृति के बाद मेरी पाण्डुलिपियों को मेरे पुत्र विवेक रंजन ने पुस्तको के रूप में छपवाया.

मेरा विवाह लखनऊ में हुआ, मेरी पत्नी श्रीमती दयावती श्रीवास्तव की रुचियां भी लिखने पढ़ने की थीं. हम दोनो ने साथ साथ पढ़कर एम ए किया. साथ ही शिक्षा जगत में नौकरी की. उनकी भी पुस्तकें छपी. वे मुझे बराबर नया लिखने के लिये उत्साहित करती थी। मेरी यह इच्छाशक्ति कि मुझे आगे पढ़ना है, मेरी उन्नति में हमेशा सहायक रही. सामान्यतः विवाह के बाद मेरी पीढ़ी के लोग अपनी नौकरी से संतुष्ट हो जाते थे, पर हम निरंतर आगे बढ़ने के यत्न करते रहे. यही कारण है कि हम समाज को सुशिक्षित संस्कारी बच्चे दे पाये, और स्वयं अपनी शिक्षा से साहित्य व समाज में अपना स्थान बनाते बढ़ते गया। आत्म सुखाय तो हर कवि लिखता ही है. रचना प्रक्रिया प्रसव वेदना होती है, जिसमें विचारो की परिपक्वता, और उसकी समुचित विधा में अभिव्यक्ति शमिल होती है, किन्तु रचना का अंतिम उद्देश्य जनहित ही होता है. समाज में मेरी पहचान शिक्षाविद व साहित्यकार के रूप में ही है. बिना व्यक्तिगत रूप से मिले भी दुनिया के अनेक हिस्सो के पाठक मेरी रचनाओ के जरिये मुझे पसंद करते हैं, तथा दूरभाष, पत्र आदि से संपर्क व प्रशंसा करते हैं.

साहित्य ने अभिव्यक्ति के माध्यम बदले हैं. आज डेली सोप, फिल्म, टेलीविजन, आ गये हैं पर प्रकाशित पुस्तको का महत्व यथावत निर्विवाद बना हुआ है. मुझे तो बिना किताब पढ़े नींद नही आती. पुस्तकालय संस्कृति की पुनर्स्थापना मुझे आवश्यक लगती है. पाश्चात्य देशो में बुक रीडिंग हाबी के रूप में बनी हुई है, जैसे जैसे हमारे देश की संपन्नता बढ़ेगी हमारे यहां भी पुस्तक संस्कृती फिर से लोकप्रिय होगी ऐसा मेरा विश्वास है.

नये माध्यमो जैसे फेसबुक आदि ने नई पीढ़ी को विचार आते ही लिख डालने की आजादी दी है पर संपादन का महत्व होता है. युवा रचनाकारो को अपना लिखा बारम्बार पढ़कर सुधारकर तब रचना रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता समझ आती है. यह देखकर मुझे प्रसन्नता होती है कि साहित्य अब केवल हिन्दी के शोधार्थियो की बपौती नही रह गया है. कितने ही इंजीनियर, डाक्टर, प्रोफेशनल्स अच्छे साहित्यकार बनकर उभर रहे हैं. स्पष्ट है कि साहित्य मनोभावों की अभिव्यक्ति का संसाधन है. और यह मनोवृत्ति प्रकृति दत्त होती है. भाषाई ज्ञान उसे संप्रेषण की शक्ति देता है. नये कवियो से मेरा यही आग्रह है कि साहित्य के सौंदर्य शास्त्र की समझ विकसित करें और परिपक्व लेखन करें तो वह दीर्घ जीवी साहित्य रच सकेंगे.

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

युग का बदलाव

बचपन में देखा था तब जैसा अपना देश
आज कहीं दिखता नहीं वैसा प्रिय परिवेश
धन कम था शिक्षा थी कम छोटा था संसार
पर हर घर हर गली में था बिखरा तब प्यार

सब के मुंह में बसे थे मीठे प्यारे बोल
जो अपनों के हृदय में देते मिश्री घोल
था निर्मल वातावरण हर घर हर परिवार
जीवन में उपलब्ध थे सदा सुखद उपहार

डर था सबको धर्म का प्रेमल था व्यवहार
ईश्वर पर विश्वास था जीवन का आधार
राम-राम कह करते थे सब को सभी प्रणाम
हर गणना में भी प्रथम होता था नित राम

क्रमशः बदली वह हवा बढ़े भेद संताप
नव समाज व्यवहार से हटे पुण्य और पाप
सात्विक भोजन की जगह उपजे नए-नए स्वाद
बदली मति गति समय संग नये ढंग वार्तालाप

जैसे-जैसे ज्ञान का अधिक भरा भंडार
नई नई रीति व नीति का हुआ अधिक विस्तार
पश्चिमी शिक्षा के खुले नए-नए स्कूल
नई शिक्षा की हवा हुई संस्कृति के प्रतिकूल

पढ़ लिख नई पीढ़ी बनी नए ढंग से विद्वान
मिट गए रीति रिवाज और बूढ़ों का सम्मान
आकर्षक तो हो चला बहुत आज संसार
पर हर मन में बढ़ चला है चिंता का भंडार

घर की मिट गई एकता बिखर गए परिवार
हुए विभाजन घरों में खड़ी हुई दीवार
मिट गई छोटे बड़ों की पिछली सब पहचान
कठिन हो गया शांति सुख का कोई अनुमान

अब आंगन बगिया नहीं हैं प्लास्टिक के फूल
कई आंगन में खिल रहे कैक्टस के अब शूल
वृद्धजनों का अब कहीं रहा न कोई सम्मान
वे समझे जाने लगे अनुपयोगी सामान

घरों में तो आज रसोई का भी न कोई स्थान
होटल में भोजन किया करते नए मेहमान
बूढ़ी पीढ़ी समझती जिसे बड़ा अपमान
उस होटल को समझते लोग आज वरदान

मिलते कहना "हाय और जाते कहना बाय"
क्यों कैसी है रीती यह कुछ भी समझ ना आए
वृद्धाश्रम में वृद्ध हैं हॉस्टल में संतान
पति पत्नी घर में रहे यह है अब का ज्ञान

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

देश हमारा

देश हमारा हिन्दुस्तान
हम सब हैं इसकी सन्तान ॥

पढ़-लिख हम सब हो विद्वान्।
बने सदा अच्छे इन्सान ॥

गुलदस्ते के फूल अनेक।
ज्यों हिल-मिलकर होते एक ॥

सबको सन्मति दो भगवान
मन से दूर रहे अभिमान ॥

हम भी सब मिल उसी प्रकार।
करे सदा आपस में प्यार ॥

हिल मिल रहें
हम छोटे बच्चे, भगवान।
हमें दीजिये यह वरदान ॥

रखकर भारत माँ का ध्यान
करे सदा कुछ जन-कल्याण

करे देश ऐसा उत्थान।
बढ़े जगत् में इसका मान ॥

हो सबका बहुमुखी विकास
कोई कभी न दिखे उदास ॥

कठिन रास्ते हो आसान।
हिलमिल रहें सभी इन्सान

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' ☆ व्यक्तित्व एवं कृतित्व

श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

(आज ससम्मान प्रस्तुत है मेरे गुरुवर एवं संस्थापक प्राचार्य केंद्रीय विद्यालय-1, जबलपुर **प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध' जी** के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विमर्श उनके सुपुत्र श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव 'विनम्र' जी की कलम से। श्री विवेक रंजन जी को साहित्य की विभिन्न विधाएँ विरासत में मिली हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी अभियांत्रिकीय शिक्षा एवं कार्य के साथ निरंतर संजो कर रखा है। वे ही नहीं हम भी उनके पिताश्री को.. **एक सफल पिता, शिक्षाविद, राष्ट्रीय भावधारा के निर्झर कवि, संस्कृत ग्रंथो के हिन्दी काव्य अनुवादक, अर्थशास्त्री और सहज इंसान के रूप में अपना आदर्श मानते हैं। उनकी जीवन यात्रा एवं कृतियों/उपलब्धियों की जानकारी आप इस लिंक पर क्लिक कर पढ़ सकते हैं >>>>** प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध ')

संपादक ई-अभिव्यक्ति

(९८ जन्मदिवस पर केक काटते हुए)

मेरे पिता उम्र के दशवें दशक में हैं, परमात्मा की कृपा, उनका स्वयं का नियमित रहन सहन, खान पान, व्यायाम, लेखन, नियमित टहलना, पठन, स्वाध्याय, संयम का ही परिणाम है कि वे आज भी निरंतर सक्रिय जीवन व्यतीत कर रहे हैं. जब तक माँ का साथ रहा, पिताजी के समय पर भोजन, फल, दूध की जम्मेदारी वे लिये रहीं, माँ के हृदयाघात से दुखद आकस्मिक निधन के बाद मेरी पत्नी

ने बहू से बेटी बनकर ये सारी जिम्मेदारियां उठा ली. समय पर दवा के लिये ३ डिबियां बना दी गई हैं, जिनमें नियम से दवाई निकाल कर रख दी जाती हैं, जिन्हें याद दिलाकर पिताजी को खिलाना होता है. पिताजी की दिनचर्या इतनी नियमित है कि मैं कहीं भी रहूं समय देखकर बता सकता हूं कि वे इस वक्त क्या कर रहे होंगे.

मैं उन्हें एक सिद्धांतो के पक्के, अपनी धुन में रमें हुये सहज सरल व्यक्ति के रूप में ही पहचानता हूं. वे एक सफल पिता हैं, क्योकि उन्होने माँ के संग मिलकर हमें, मुझे व मेरी ३ बहनो को तत्कालीन औसत सामाजिक स्थितियों से बेहतर शिक्षा दी, हम सबको जीवन में सही दिशा उचित संस्कार देकर सुव्यवस्थित किया. उनके स्वयं के सदा भूख से एक रोटी कम खाने की आदत, भौतिकता की दौड़ के समय में भी संतोष की वृत्ति के कारण ही वे आज हमारे बच्चो तक को निर्देशित करने की स्थिति में हैं. वे स्वयं के लिए जरूरत से ज्यादा मितव्ययी हैं, पर हम लोगों को जब तब लाखो के चैक काटकर दे देते हैं। कागज व्यर्थ करना उन्हें पसंद नही आता हर टुकड़े पर लिखते हैं।

मण्डला में गौड़ राजाओ के दीवानी कार्यो हेतु मूलतः मुगलसराय के पास सिकंदरसराय से मण्डला आये हुये कायस्थ परिवार में मेरे पिता प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध" का जन्म २३मार्च १९२७ को स्व श्री सी एल श्रीवास्तव व माता श्रीमती सरस्वती देवी के घर हुआ था. पिताजी उनके भाईयो में सबसे बड़े हैं. मण्डला में हमारा घर महलात कहलाता है, जिसका निर्माण व शैली किले के साथ की है, घर नर्मदा तट से कोई २०० मीटर पर पर्याप्त उंचाई पर है. बड़ा सा आहाता है, इतना बड़ा कि वर्ष १९२६ में जब नर्मदा जी में अब तक की सबसे बड़ी बाढ़ आई थी तब वहां हजारो लोगो की जान बची थी. घर पर इस कार्य के लिये तत्कालीन अंग्रेज प्रशासको का दिया हुआ प्रशस्ति पत्र भी है. पिताजी बताते हैं कि जब वे बच्चे थे तो स्टीम एंजिन से चलने वाली बस से जबलपुर आवाजाही होती थी. नर्मदा जी के उस पार महाराजपुर में मण्डला फोर्ट नेरो गेज रेल्वे स्टेशन टर्मिनस था. जो नैनपुर जंकशन को मण्डला से जोड़ती है. अब नेरो गेज बंद हो चुकी है, ब्राड गेज लाईन डाली जा चुकी है. यह सब लिखने का आशय मात्र इतना कि पिताजी ने विकास के बड़े लम्बे आयाम देखे हैं, कहां आज वे मेरे बच्चो के साथ दुबई, श्रीलंका, आदि हवाई विदेश यात्रायें कर रहे हैं और कहां उन्होने लालटेन की रोशनी में पढ़ा, पढ़ाया है. स्वतंत्रता के आंदोलन में छात्र जीवन में सहभागिता की है. मण्डला के अमर शहीद उदय चंद जैन उनकी ही डेस्क पर बैठने वाले उनके सहपाठी थे. मेरे दादा जी कांग्रेस के एक्टिव कार्यकर्ता थे, छोटी छोटी देशभक्ति के गीतो

की पुस्तिकायें वे युवाओ में वितरित करते थे, प्रसंगवश लिखना चाहता हूं कि आजादी के इन तरानो का संग्रह हमने जिला संग्रहालय मण्डला में भेंट किया है, जो वहां सुरक्षित है. पिताजी के आदर्श ऐसे, कि जब १९७० के आस पास स्वतंत्रता संग्राम सेनानियो की सूची बनी और ताम्र पट्टिकायें, पेंशन वगैरह वगैरह लाभ बटें तो न तो पिताजी ने स्वयं का और न ही हमारे दादा जी का नाम पंजीकृत करवाया.

पिताजी ने शालेय शिक्षा मण्डला के ही सरकारी स्कूल में प्राप्त की. एम. ए. हिन्दी, एम. ए. अर्थशास्त्र, साहित्य रत्न, एम. एड. की उपाधियां प्राप्त की. वे चाहते तो रेवेन्यू सर्विसेज में जा सकते थे, किन्तु जैसा वे चाहते थे, उन्होंने शिक्षण को ही अपनी नौकरी के रूप में चुना. वे केंद्रीय विद्यालय क्रमांक १ जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य रहे. शिक्षा विभाग में दीर्घ कालीन सेवाये देते हुये प्रांतीय शासकीय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर से प्राध्यापक के रूप में सेवानिवृत हुये हैं. उस पुराने जमाने में उनका विवाह लखनऊ में हुआ. इतनी दूर शादी, मण्डला जैसे पिछड़े क्षेत्र में सहज बात नही थी. माँ, पढ़ी लिखी थीं. फिर मां ने नौकरी भी की, मैं समझ सकता हूं यह तो मुहल्ले के लिये अजूबा ही रहा होगा. मम्मी पापा ने साथ मिलकर पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की. नौकरी में तत्कालीन सी पी एण्ड बरार के अमरावती, खामगांव आदी स्थानो पर निकले, मुझे लगता है उनका यह संघर्ष आज मेरे बच्चों के दुबई, न्यूयार्क और हांगकांग जाने से बड़ा था.

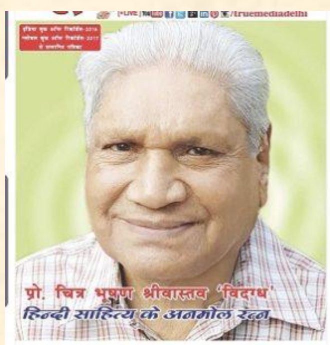

(**ट्रू मीडिया** द्वारा **प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव 'विदग्ध'** पर केंद्रित विशेषांक का आवरण पृष्ठ)

१९४८ में सरस्वती पत्रिका में पिताजी की पहली रचना प्रकाशित हुई. निरंतर पत्र पत्रिकाओ में कविताये, लेख, छपते रहे हैं. आकाशवाणी व दूरदर्शन से अनेक प्रसारण होते रहे हैं. दूरदर्शन भोपाल ने एक व्यक्तित्व ऐसा नाम से उन पर फ़िल्म बनाई है। ट्रू मीडिया ने उन पर केंद्रित विशेषांक प्रकाशित किया है। ईशाराधन, वतन को नमन, अनुगुंजन, नैतिक कथाये, आदर्श भाषण कला, कर्म

भूमि के लिये बलिदान, जनसेवा, अंधा और लंगड़ा, मुक्तक संग्रह, अंतर्ध्वनि, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, शिक्षण में नवाचार मानस के मोती, अनुभूति, रघुवंश हिंदी भावानुवाद, भगवत गीता हिंदी काव्य अनुवाद, मेघदूतम, हाल ही प्रकाशित शब्दधारा आदि साहित्यिक व शैक्षिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं. संस्कृत तथा मराठी से हिन्दी भावानुवाद के क्षेत्र में आपने उल्लेखनीय कार्य किया है. संस्कृत न जानने वाली युवा पीढ़ी के लिये भगवत गीता का हिन्दी पद्यानुवाद, महा कवि कालिदास के अमर ग्रंथो मेघदूतम् का हिन्दी पद्यानुवाद तथा रघुवंशम् पद्यानुवाद एवं मराठी से हिन्दी अनुवादित प्रतिभा साधन प्रमुख अनुवादित पुस्तकें हैं. समसामयिक घटनाओ पर वे नियमित काव्य विधा में अपनी अभिव्यक्ति करते रहते हैं. उन्हें दूरदर्शन देखना ही भरोसेमंद लगता है. उनके कमरे से आस्था व उस जैसे चैनलो की आवाजें ही हमें सुनने मिलती हैं. अखबार बहुत ध्यान से देर तक दोपहर में पढ़ा करते हैं. उनके सिराहने किताबो, पत्रिकाओ का ढ़ेर लगा रहता है. रात में भी कभी जब उनकी नींद खुल जाती है, पढ़ना उनका शगल है. मेरी पत्नी कभी कभी मुझसे कहा करती है कि यदि पापा जी जितना पढ़ते हैं उतना कोई बच्चा पढ़ ले तो कई बार आई ए एस पास हो जाये. वे व्यवहार में इतने सदाशयी हैं कि आदर पूर्वक बुला लिया तो आयोजन में समय से पहुंच जायेंगे, साहित्य ही नही किसी भी जोड़ तोड़ से हमेशा से बहुत दूर रहते हैं. जबलपुर आने के बाद से उम्र के चलते व हमारे रोकने से अब वे स्वयं तो बागवानी नही करते किंतु पेड़ पौधो में उनकी बड़ी रुचि है. उनकी बागवानी के शौक को मेरी पत्नी क्रियान्वयन करती दिखती है। मण्डला में वे नियमित एक घण्टे प्रतिदिन सुबह घर पर बगीचे में काम करते, व इसे अपना व्यायाम कहते. युवावस्था में वे हाकी, बालीबाल, खेला करते थे, उनके माथे पर हाकी स्टिक से लगा गहरा कट का निशान आज भी है. वे अपने परिवेश में सदैव साहित्यिक वातावरण सृजित करते रहे, जिस भी संस्थान में रहे वहां शैक्षणिक पत्रिका प्रकाशन, साहित्यिक आयोजन करवाते रहे. उन्होने संस्कृत के व हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिये राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा, तथा बुल्ढ़ाना संस्कृत साहित्य मण्डल के साथ बहुत कार्य किये. अनेक पुस्तकालयो में लाखो की किताबें वे दान दे चुके हैं. प्रधानमंत्री सहायता कोष, उदयपुर के नारायण सेवा, तारांशु व अन्य संसथानो में घर के किसी सदस्य की किसी उपलब्धि, जन्मदिन आदि मौको पर नियमित चुपचाप दान राशि भेजने में उन्हें अच्छा लगता है. वे आडम्बर से दूर सरस्वती के मौन साधक हैं. मुझे लगता है कि वे गीता को जी रहे हैं.

श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

“सरस्वती पुत्र प्रोफ़ेसर चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध”

श्री सुरेश पटवा

प्रोफेसर चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी ने अपने लगभग 99 वर्ष के जीवन में कला और साहित्य के कई स्वरूपों में कार्य करते हुए गीत को जिया है। वे शिक्षा शास्त्री के साथ एक समाज शास्त्री भी थे। उनकी आध्यात्मिक ज्ञान और सांस्कृतिक चेतना उन्नत स्तर की थी। उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में कई विधाओं में यथा छंदबद्ध और मुक्तक रचना में निरंतर लिखा। वे आध्यात्मिक तथा राष्ट्रीय भावधारा की रचनाओं में सिद्धहस्त थे। उन्होंने दोहा, गीत, नवगीत और शायरी पर एक सी कलम चलाई। उन्होंने गद्य के क्षेत्र में निबंध, भाषा विज्ञान, विश्लेषण पर उत्कृष्ट लेखन किया। उनके लेखन में पाणिनि, वेदव्यास, वाल्मिकी, गोस्वामी तुलसीदास, रामधारी सिह दिनकर, मैथली शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी के लेखन के दर्शन होते हैं।

श्री चित्र भूषण श्रीवास्तव ने शिक्षा विभाग में विभिन्न प्रशासनिक दायित्वपूर्ण पदों जैसे प्राध्यापक, प्राचार्य, संचालक का उत्तरदायित्व सफलता पूर्वक निर्वाह किया। राज्य व केंद्र सरकार के शिक्षण संस्थानो में कार्यरत रह कर अनेक समितियों में सलाहकार तथा महत्वपूर्ण दायित्व का निर्वाह करते रहे हैं। एक दैदिप्यमान नक्षत्र के रूप में वे शिक्षा जगत में सुविख्यात हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी, शिक्षा विशेषज्ञ, सरल सहज किंतु दृढ़, क्रियाशील व ऊर्जस्वी, अध्यनशील, परम ज्ञानी तथा सच्चे सरस्वती पुत्र विदग्ध जी अक्षर साधक व साहित्य सेवी के रूप में न केवल प्रतिष्ठित है बल्कि अनेक पीढ़ियों के रचनाकारो के लिए गहन आदर के पात्र व प्रेरणा स्रोत हैं।

वे जितने गंभीर हैं उतने ही उच्च विचारों के तथा विशाल ह्रदय के व्यक्तित्व रहे। उनके निर्विवाद जीवन में गतिशीलता, प्रवाह, सरसता हमेशा बनी रही। उनका जीवन अनेकों के लिये दृष्टांत बन गया है।

सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, भार तीय भावधारा, आध्यात्मिक, मानवीय, नारी उत्थान, शोध विषयों, पर साधिकार विशेषज्ञ के रूप में लिखने वाले आदरणीय विदग्ध जी हिंदी अंग्रेजी

संस्कृत मराठी में महारत रखते हैं। वे अनुवाद के रूप में विशिष्ट इसलिये हैं क्योंकि वे मात्र शब्दानुवाद ही नही करते, वे मूल रचना के भावों का अनुवाद करते हैं, इतना ही नही वे काव्य में अनुवाद करते हैं। यह विशेष गुण उन्हें सामान्य अनुवाद कर्ताओं से भिन्न विशिष्ट पहचान दिलाती है। उन्हें भारतीय अनुवाद परिषद द्वारा सर्वोच्च गार्गी सम्मान से सम्मानित किया गया है।

वय के नो दशक पूर्ण कर लेने के बाद भी उतने ही क्रियाशील बने रहे। विभिन्न विषयो की तीन दर्जन से ज्यादा मौलिक क़िताबों के रचनाकार एक सक्षम सम्पादक के रूप में भी क्रियाशील रहे हैं। अनेक युवा लेखको को प्रोत्साहित कर उनके मार्गदर्शन का यश भी उनके खाते में दर्ज है। वे आंतरिक शुचिता, सांस्कृतिक मूल्यों, समाजिक समरसता, सद्भाव, सौहार्द्र, सहिष्णुता, नारी समानता के ध्वजवाहक रचनाकार हैं। उनके सारस्वत रचनाकर्म अभिवंदना योग्य हैं।

ऐसे व्यक्तित्व कम ही हैं जिनका समग्र जीवन लेखन और समाज निर्माण के लिए समर्पित हुआ हो, जिन्होंने जो कुछ लिखा उसे अपने जीवन में उतारने का आदर्श भी प्रस्तुत किया हो। वे सदा सादा जीवन उच्च विचार के मूल्यों को अपनी लेखनी से व्यक्त ही नही करते थे वरन अपने आचरण से उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत भी करते रहे। उन्हें समय समय पर देश की अनेक संस्थाओं ने सम्मानित कर अलंकरण, पुरस्कार, मानपत्र भेंट कर स्वयं संस्थाएं गौरव अनुभव करती थीं। वे जितने अच्छे कवि औऱ लेखक हैं उतने ही प्रवीण वक्ता भी हैं। वे जिस आयोजन में अतिथि होते हैं वहां उन्हें सुनने के लिए लोग लालायित रहते हैं। उनका आभामण्डल बहुमुखी था।

उन्हें यह दक्षता उनके गहन अध्ययन। चिंतन मनन से मिली है। उनके शैक्षणिक शोध कार्य अन्तराष्ट्रीय स्तर पर सराहना अर्जित कर चुके हैं। उनके निजी ग्रन्थालय में सैकड़ों पुस्तकें हैं। अनेक स्कूलों को उन्होंने स्वयं अपनी व अन्य ढेर पुस्तकें बांटी हैं। वे सचमुच साहित्य रत्न हैं।

आकाशवाणी व दूरदर्शन से उनकी रचनाएं प्रसारित होती रही। दूरदर्शन ने उन पर एक व्यक्तित्व ऐसा भी, डॉक्यूमेंट्री बनाई है। सरस्वती सी प्रतिष्ठित पत्रिका में 1946 में उनकी पहली रचना छपी तभी से उनके लेखन प्रकाशन का यह क्रम अनवरत जारी रहा। उनकी बाल साहित्य की पुस्तकें नैतिक शिक्षा, आदर्श भाषण कला, कर्म भूमि के लिये बलिदान, जनसेवा आदि प्रदेश की प्रायः प्राथमिक शालाओ व ग्राम पंचायतों के पुस्तकालयों में सुलभ हैं।

कविता उनकी सबसे प्रिय विधा है, ईशाराधन में जन कल्याणकारी प्रार्थनाएं हैं, तो वतन को नमन में देश राग है, जिसे तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व अटलजी ने भी सराहा था। अनुगुंजन में उनके मन

की विविधता की अनुगुंजित कवितायें हैं, वसुधा के सम्पादक कमला प्रसाद जी ने पुस्तक की भूमिका में ही कवि की भूरि भूरि प्रशंसा की है। स्वयं प्रभा तथा अंतर्ध्वनि बाद के संग्रह हैं, अक्षरा के सम्पादक श्री कैलाश चन्द्र पन्त ने विदग्ध जी की पंक्तियों को उधृत किया है, व लिखा है कि इन पंक्तियों में कवि ने सरल शब्दों में भारतीय दर्शन की व्यख्या की है।

प्रकृति में है चेतना हर एक कण सप्राण है

इसी से कहते कण कण में बसा भगवान है

चेतना है उर्जा एक शक्ति जो अदृश्य है

है बिना आकार पर अनुभूतियो में दृश्य है

भगवत गीता का हिन्दी काव्य अनुवाद तो इतना लोकप्रिय है कि उसके पांच संस्करण छप कर समाप्त हो गए हैं। मेघदूतम व रघुवंश के अनुवाद कालिदास अकादमी उज्जैन के डॉ कृष्ण कांत चतुर्वेदी जी द्वारा सराहे गए हैं। मेघदूतम पर कोलकाता में नृत्य नाटक हो चुके हैं। उनके ब्लाग संस्कृत का मजा हिंदी में पर दुनिया भर से हिट्स मिलते हैं। वे शिक्षा शास्त्री हैं, समाज उपयोगी कार्य, माइक्रो टीचिंग, शिक्षण में नवाचार आदि किताबे उनके इस पहलू को उजागर करती हैं।

जरूरत है कि समय रहते उनके लेखन पर शोधकर्ताओं का ध्यान आकर्षित हो। उनकी अनेकानेक रचनाये जैसे रानी दुर्गावती, शंकरशाह, रघुवीरसिंह, महराणा प्रताप, भारत माता, आदि स्कूली व महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किए जाने योग्य हैं। उनके चिंतन युवा पीढ़ी के मार्गदर्शक हैं। कई अखबार उनके हिंदी अनुवाद कार्य धारावाहिक रुप से प्रकाशित कर रहे हैं। नर्मदा जी पर उनके गीत का आडियो रूप में प्रस्तुतिकरण सराहा गया है। यह टी सीरीज से तैयार हुआ है।

उनकी इच्छा शक्ति, जिजीविषा ने उन्हें उसूलों के लिए संघर्ष का मार्ग दिखाया। वे दृढ संकल्प होकर उस पर चलते रहे, औऱ ऐसे राहगीर अनुकरण योग्य मार्ग बनाने में सफल होते ही हैं। यथार्थ यह है की वे निष्ठावान गांधीवादी हैं। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि प्रतिष्ठा पूर्ण रही है पर उन्होने यश अर्जन अपने सुकृत्यों से और सफल लेखन से ही किया है। उनकी जीवन संगनी भी एक विदुषी शिक्षा शास्त्री थी, जिनके साथ ने विदग्ध जी को परिपूर्णता दी। श्रीमती दयावती श्रीवास्तव की स्वयं की किताबें संस्कृत मंजरी कभी शालेय पाठ्यक्रम में थी। प्रोफेसर श्रीवास्तव भावुक सहृदय हैं, पर दुर्बल नही। उनकी सात्विकता सम्यकता उन्हें क्षमतावान बनाती है, वे प्रणम्य हैं।

श्री सुरेश पटवा, भोपाल, मध्य प्रदेश

स्मृतिशेष प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव.. गीता को जीते हुये, बिदा हुए साहित्यकार

प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

भगवत गीता के उनके द्वारा किये गये हिन्दी काव्य अनुवाद का पांचवा संस्करण प्रकाशित हुआ है. महाकवि कालिदास के रघुवंश, मेघदूत का भी उन्होने हिन्दी में श्लोकशः अनुवाद कर इन अप्रतिम ग्रंथो को संस्कृत न जानने वाले पाठको के लिये भी काव्य के उसी सौंदर्य के संग सुलभ कर दिया है. वे एक सिद्धांतो के पक्के, अपनी धुन में रमें हुये सहज सरल व्यक्ति थे.

जन्म - मण्डला में गौड़ राजाओ के दीवानी कार्यो हेतु **मूलतः** मुगलसराय के पास सिकंदरसराय से मण्डला आये हुये कायस्थ परिवार में प्रो. चित्र भूषण श्रीवास्तव "विदग्ध" का जन्म सन १९२७ में हुआ था. उन्होंने विकास के बड़े लम्बे आयाम देखे हैं, मण्डला में ही नेरो गेज से ब्राड गेज रेल्वे के वे साक्षी हैं. आज वे दुबई, श्रीलंका, आदि हवाई विदेश यात्रायें कर रहे हैं और कहां उन्होने लालटेन की रोशनी में पढ़ा, पढ़ाया है. स्वतंत्रता के आंदोलन में छात्र जीवन में सहभागिता की है. मण्डला के अमर शहीद उदय चंद जैन उनकी ही डेस्क पर बैठने वाले उनके सहपाठी थे.

व्यवसाय - वे केंद्रीय विद्यालय क्रमांक १ जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य रहे. शिक्षा विभाग में दीर्घ कालीन सेवाये देते हुये प्रांतीय शासकीय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर से प्राध्यापक के रूप में सेवानिवृत हुये. उस पुराने जमाने में उनका विवाह लखनऊ में हुआ था. इतनी दूर शादी, मण्डला जैसे पिछड़े क्षेत्र में सहज बात नही थी. फिर पत्नी ने नौकरी भी की. यह तो मुहल्ले के लिये अजूबा ही रहा होगा.

साहित्य सेवा - १९४८ में सरस्वती पत्रिका में उन की पहली रचना प्रकाशित हुई. निरंतर पत्र पत्रिकाओ में कविताये, लेख, छपते रहे हैं. आकाशवाणी व दूरदर्शन से अनेक प्रसारण होते रहे हैं. दूरदर्शन भोपाल ने "एक व्यक्तित्व ऐसा " नाम से उन पर फ़िल्म बनाई है। दिल्ली से ट्रू मीडिया ने उन पर केंद्रित विशेषांक प्रकाशित किया।

पुस्तकें - ईशाराधन, वतन को नमन, अनुगुंजन, नैतिक कथाये, आदर्श भाषण कला, कर्म भूमि के लिये बलिदान, जनसेवा, अंधा और लंगड़ा, मुक्तक संग्रह, अंतर्ध्वनि, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, शिक्षण में नवाचार मानस के मोती, अनुभूति, रघुवंश हिंदी भावानुवाद, भगवत गीता हिंदी काव्य अनुवाद, मेघदूतम, शब्दधारा आदि साहित्यिक व शैक्षिक ४० से ज्यादा किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं.

वे संस्कृत से हिन्दी भावानुवाद के मर्मज्ञ थे. महाकवि कालिदास के अमर प्रेम काव्य मेघदूत के सारे श्लोक उन्होने यथा भाव छंद बद्ध हिन्दी कविता में रचे जो पुस्तक रूप में प्रकाशित हैं. इसी तरह कालिदास कृत रघुवंशम के समस्त १९०० श्लोको का श्रमसाध्य छंद बद्ध हिन्दी अनुवाद भी उन्होने किया है यह भी पुस्तक रूप में सुलभ है. देशबन्धु समाचार पत्र ने इसे तथा उनके द्वारा अनुवादित भगवत गीता को धारावाहिक रूप से प्रकाशित भी किया है.

वे बाल साहित्य व राष्ट्रीय भावधारा की कविताओ के साथ ही भक्ति गीतों, समसामयिक घटनाओ पर त्वरित कविताओ और हिन्दी गजलो के लिये भी पहचाने जाते थे.

उनकी अनेकानेक कविताओ में से दो एक यहाँ उधृत हैं...

बाल साहित्य -

*

भारत हमें है प्यारा यह देश है हमारा

हम इसकी करें सेवा इसका हमें सहारा

इसकी जमीन मां की गोदी सी है सुहानी

फल अन्न इसके मीठे अमृत सा इसका पानी

इस भूमि पर ही कभी राम कृष्ण आए

गुणगान जिनके अब तक जाते सदा सुनाएं

यहां देवगिरी हिमालय सरिता पुनीत गंगा

इनकी यशों की गाथा गाता है नित तिरंगा

या

राष्ट्रीय भाव धारा की रचना -

*

हिमगिरि शोभित सागर सेवित

सुखदा गुणमय गरिमा वाली

सस्य श्यामला शांति दायिनी

परम विशाला वैभवशाली ॥

*

प्राकृत पावन पुण्य पुरातन

सतत नीती नय नेह प्रकाशिनि

सत्य बन्धुता समता करुणा

स्वतंत्रता शुचिता अभिलाषिणि ॥

*

ज्ञानमयी युग बोध दायिनी

बहु भाषा भाषिणि सन्मानी

हम सबकी माँ भारत माता

**

भक्ति रचनायें -

*

दर्शन के लिये, पूजन के लिये, जगदम्बा के दरबार चलो

मन में श्रद्धा विश्वास लिये, मां का करते जयकार चलो !!

जय जगदम्बे, जयजगदम्बे !!

है डगर कठिन देवालय की, माँ पथ मेरा आसान करो

मैं द्वार दिवाले तक पहुँचू, इतना मुझ पर एहसान करो !!

जय जगदम्बे, जयजगदम्बे !!

*

उँचे पर्वत पर है मंदिर, अनुपम है छटा, छबि न्यारी है

नयनो से बरसती है करुणा, कहता हर एक पुजारी है !!

जय जगदम्बे, जयजगदम्बे !!

*

मां ज्योति तुम्हारे कलशों की, जीवन में जगाती उजियाला

हरयारी हरे जवारों की, करती शीतल दुख की ज्वाला !!

जय जगदम्बे, जयजगदम्बे !!

*

जगजननि माँ शेरावाली ! महिमा अनमोल तुम्हारी है

जिस पर करती तुम कृपा वही, जग में सुख का अधिकारी है !!

जय जगदम्बे, जयजगदम्बे !!

*

तुम सबको देती हो खुशियाँ, सब भक्त यही बतलाते हैं

जो निर्मल मन से जाते हैं वे झोली भर वापस आते है !!

जय जगदम्बे, जयजगदम्बे !!

या

शुभवस्त्रे हंस वाहिनी वीण वादिनी शारदे,

डूबते संसार को अवलंब दे आधार दे !

*

हो रही घर घर निरंतर आज धन की साधना,

स्वार्थ के चंदन अगरु से अर्चना आराधना

आत्म वंचित मन सशंकित विश्व बहुत उदास है,

चेतना जग की जगा मां वीण की झंकार दे !

*

सुविकसित विज्ञान ने तो की सुखों की सर्जना

बंद हो पाई न अब भी पर बमों की गर्जना

रक्त रंजित धरा पर फैला धुआं और और ध्वंस है

बचा मृग मारिचिका से, मनुज को माँ प्यार दे

थक गया चल विश्व, झुलसाती तपन की धूप में

हृदय को माँ ! पूर्णिमा सा, मधु भरा संसार दे

**

उनके हिन्दी गीत देखें -

शारदी चांदनी सा धुला मन, जब पपीहा सा तुमको पुकारे

सावनी घन घटा से उमड़ते, स्वप्न से तुम यहां चले आना

प्राण के तार खुद झनझना के, याद की वीथिका खोल देंगे

नैन मन की मिली योजना से, चित्र सब कुछ स्वतः बोल देंगे

बात करते स्वतः बावरे से, प्रेम रंग में रंगे सांवरे से

वीण से गीत गुनगुनाते, स्वप्न से तुम यहां चले आना

**

हिन्दी गजल -

तुम्हारे संग जिये जो दिन भुलाये जा नहीं सकते
मगर मुश्किल तो ये है फिर से पाये जा नहीं सकते
कदम हर एक चलके साथ तुमने जो निभाया था
*
दुखी मन से किसी को वे बताये जा नहीं सकते
चले हम राह में जब धूप थी तपती दोपहरी थी
सहे लू के थपेडे जो गिनाये जा नही सकते
लगाये ध्यान पढते पुस्तकें रातें बिताई गई
दुखद किस्से परिश्रम के सुनाये जा नहीं सकते
तुम्हारे नेह के व्यवहार फिर फिर याद आते है
दुखाकुल मन से जो सबको बताये जा नही सकते
बसी हैं कई प्रंसगो की सजल यादें नयन मन में
चटक हैं चित्र ऐसे जो मिटाये जा नही सकते

पर्यावरण, साफ सफाई अभियान, शिक्षा, रानी दुर्गावती, महाराणा प्रताप, सरदार पटेल, माँ नर्मदा, लगभग हर विषय पर उन्होने बड़ी प्रभावी गीत रचनायें की है.

गद्य पर भी उनका समान अधिकार है. उन्होने विविध विषयों पर ललित निबंध, चिंतन, मानस विषयक, स्त्री विमर्श व शैक्षिक शोध आलेख खूब लिखे हैं.

उनके दो एक आलेखों के उधृत अंश देखिये -

"धन सदा सुखदायी ही नहीं होता. अनुचित साधनों से धन की प्राप्ति नये संकट ले आती है. सुख सचमुच में धन प्राप्ति के लिए अंधी दौड़ में नहीं, प्रेम के निश्छल आदान-प्रदान में है. सहयोग और ईमानदारी में सुख के बीज छिपे होते हैं। परन्तु इस सचाई को भुलाकर नवीनता की चका-चौंध में जो गलत प्रयत्न धन पाने के लिए अपनाएँ जा रहे हैं उन्होंने जीवन की कठिनाइयाँ बढ़ा दी है। भारतीय संस्कृति में तप और त्याग का धार्मिक महत्व रहा है। इसी पवित्र भावना ने समाज को बाँधे रखा है और मन को बेलगाम होकर दौड़ने से रोके रखा है। किन्तु आज अन्य सभ्यताओं की देखा देखी भारतीय संस्कारों को तिलांजलि देकर लोगों ने बाह्य आकर्षणों में सुख की साध पाल ली है इससे ही समाज का नैतिक पतन हो रहा है. यदि हमें अपने देश को फिर से नैतिक रूप से स्वस्थ और समृद्ध बनाना है तो भारत भूमि की ही जलवायु की उपासना करनी होगी और युग की नवीनता को अपने कार्यक्रमों में उचित रूप से समायोजित करना होगा। बिना सदाचरण, निष्ठा और नैतिकता को अपनायें जीवन में वास्तविक सुख-शांति और समृद्धि असंभव है। "

या

जिसमें आत्मविश्वास प्रबल है उसकी विजय प्रायः सुनिश्चित होती है। कोई भी कार्य छोटा हो या बड़ा, सरल हो या कठिन काम करने वाले के मन में सफलता पाने का आत्मविश्वास होना बहुत जरूरी है। विश्व इतिहास के पन्ने, आत्मविश्वासी की विजयों से भरे पड़े हैं। क्षेत्र राजनीति का हो या विज्ञान का, व्यक्ति के आत्मविश्वास ने समस्याओं का सदा समाधान कराया है। चन्द्रगुप्त के आत्मविश्वास ने भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। यूरोप में नेपोलियन बोनापार्ट की हर जीत का रहस्य उस का आत्मविश्वास ही था। विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी नये आविष्कार के लिये वैज्ञानिकों की लगन, परिश्रम और सूझबूझ के साथ ही उनके आत्मविश्वास और धैर्य के बल पर ही सफलता प्राप्त होती है। आत्मविश्वासी वीरों ने ही हिमालय की सर्वोच्च ऊंची चोटी गौरीशंकर जिसे एवरेस्ट भी कहा जाता है तक पहुंचकर अपने अदम्य साहस का परिचय दिया है। आत्मविश्वास व्यक्ति को निडर, उत्साही और धैर्यवान बनाता है।

या

"नैतिक, चरित्रवान, कर्मनिष्ठ समाज तैयार करने के लिये सही शिक्षा की आवश्यकता है. शालाओं और परिवार दोनो की बच्चो में सही गुणो के विकास की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है. वर्तमान में जो आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियां हैं वे इस दिशा में परिवर्तन चाहती हैं. सबके सही व्यक्तित्व के निर्माण की आवश्यकता है. राष्ट्रीय चरित्र में इसी से स्थाई सुधार संभव होगा. आत्म अनुशासन ही समाज में स्थाई सुख और शांति का श्रोत है. समाज में नैतिकता का सम्मान अतिआवश्यक है, और यह सब ऐसे बाल साहित्य की जरूरत प्रतिपादित करता है जो शिशु शिक्षा से प्रारंभ व्यक्तित्व निर्माण, किशोर, युवा, व इस तरह एक आत्म अनुशासित पीढ़ी का विकास कर सके. "

वे अपने परिवेश में सदैव साहित्यिक वातावरण सृजित करते रहे, जिस भी संस्थान में रहे वहां शैक्षणिक पत्रिका प्रकाशन, संपादन व साहित्यिक आयोजन करवाते रहे. उन्होने संस्कृत के व हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिये राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा, तथा बुल्ढ़ाना संस्कृत साहित्य मण्डल के साथ बहुत कार्य किये. अनेक पुस्तकालयो में लाखो की किताबें उन्होंने दान में दिया था.

गुप्त दान की अभिरुचि. . . प्रधानमंत्री सहायता कोष, उदयपुर के नारायण सेवा, तारांशु व अन्य संस्थानो में घर के किसी सदस्य की किसी उपलब्धि, जन्मदिन आदि मौको पर नियमित चुपचाप दान राशि भेजने में उन्हें अच्छा लगता है. वे आडम्बर से दूर सरस्वती के मौन साधक कर्मवीर हैं. वे गीता को जीते थे.

© प्रो. (डॉ.) शरद नारायण खरे

प्राचार्य, शासकीय महिला स्नातक महाविद्यालय, मंडला, मप्र -481661

(मो. 9425484382)

ईमेल – khare. sharadnarayan@gmail. com

स्मृति शेष शिक्षाविद, साहित्यकार विदग्ध जी

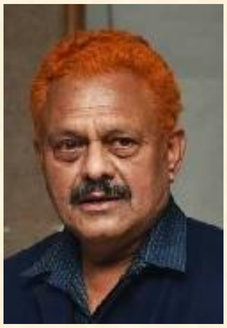

श्री प्रतुल श्रीवास्तव

संघर्ष-साधना से भरे सात्विक जीवन के साथ अध्ययन, चिंतन-मनन से प्राप्त परिपक्वता और आभा के तेज से जिनका मुखमंडल सदा दीप्त रहता था उन्हें हम सब कवि-साहित्यकार, अनुवादक, अर्थशास्त्री और शिक्षाविद प्रो. चित्रभूषण श्रीवास्तव "विदग्ध" के नाम से जानते हैं। हिंदी, अर्थशास्त्र एवं शिक्षा में स्नातकोत्तर उपाधियां प्राप्त करने के साथ ही आपने साहित्य में विशेष रुचि के कारण साहित्य रत्न की उपाधि भी प्राप्त की थी। विभिन्न नगरों के विद्यालयों में अपनी विद्वता एवं अध्यापन कौशल से इन्होंने अपने सहयोगियों और छात्रों से सदा विशिष्ट आदर व स्नेह प्राप्त किया। प्रो. चित्रभूषण जी केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य थे। वे प्रान्तीय शिक्षण महाविद्यालय जबलपुर से प्राध्यापक के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

1948 में देश की प्रतिष्ठित पत्रिका सरस्वती में विदग्ध जी की प्रथम रचना प्रकाशित हुई थी फिर निरन्तर देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं के प्रकाशन का सिलसिला जारी रहा। आकाशवाणी केन्द्रों एवं दूरदर्शन से भी उनकी रचनाओं का प्रसारण जब-तब होता रहा। ईशाराधन, वतन को नमन, अनुगुंजन, नैतिक कथाएं, आदर्श भाषण कला, कर्मभूमि के लिए, बलिदान, जनसेवा, अंधा और लंगड़ा, मुक्तक संग्रह, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य, शिक्षण में नवाचार, मानस के मोती आदि उनकी चर्चित पुस्तकें हैं। प्रो. चित्रभूषण जी ने भगवतगीता, मेघदूतम एवं रघुवंशम के हिंदी अनुवाद के साथ ही संस्कृत एवं मराठी के अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का हिंदी अनुवाद भी किया। सम सामयिक घटनाओं पर निर्भीकता से कलम चलाने वाले गांधीवादी साहित्यकार "विदग्ध"जी के प्रशंसकों में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी जी भी शामिल थे। शिक्षा विभाग की अनेक समितियों में पदाधिकारी/सदस्य रहे प्रो. चित्रभूषण जी जबलपुर सहित जिन-जिन नगरों में सेवारत रहे वहां की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के माध्यम से प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का कार्य

भी करते रहे। उन्होंने मंडला में रेडक्रॉस समिति की स्थापना की। छात्र जीवन में हॉकी एवं वालीबॉल के खिलाड़ी रहे विदग्ध जी नई पीढ़ी को संदेश देते हुए कहते थे कि "नियमित एवं सादा जीवन मनुष्य को शारीरिक-मानसिक व्याधियों से दूर रखता है। " वे गीता को धर्म विशेष का ग्रंथ न मान कर इसे समस्त मानव जाति का पथ प्रदर्शक मानते थे। उनके अनुसार जीवन में क्या उचित, क्या अनुचित है यही गीता में बताया गया है।

ज्ञान-साधना से प्राप्त अनुभवों को आजीवन उदारता पूर्वक समाज को वितरित करते रहने वाले प्रो. चित्रभूषण श्रीवास्तव "विदग्ध" जी अब हमारे बीच नहीं हैं किंतु उनके द्वारा रचित साहित्य एवं उनका जीवन दर्शन सदा समाज का मार्गदर्शन करता रहेगा।

☆

© श्री प्रतुल श्रीवास्तव

संपर्क – 473, टीचर्स कालोनी, दीक्षितपुरा, जबलपुर – पिन – 482002 मो. 9425153629

(**ज्ञान मुद्रा पब्लिकेशन** के **श्री वरुण माहेश्वरी जी** के **सुपुत्र नन्हें ओम** ने घर आकर पिताजी को **गीता अनुवाद** की प्रति भेंट की थी.)

स्मृतिशेष प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी विशेष – शब्द पुष्पांजलि

☆ साभार - स्मृतिशेष प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी के स्वजन-मित्रगण ☆

वरिष्ठ साहित्यकार, भगवतगीता, रघुवंश, मेघदूत के हिंदी काव्य अनुवादक, 40 से ज्यादा कृतियों के कवि, लेखक, आध्यात्मिक, राष्ट्र प्रेम की भावधारा के साहित्यिक रचनाकार पिताजी प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध का दुखद अवसान 99 वर्ष की आयु में आज 25 जुलाई को शाम 4 बजकर 50 मिनट पर हो गया है। उन्होने शांति से अंतिम सांसे ली, और दिव्य स्थान को प्रस्थान कर गए हैं।

उन्होंने बच्चों के बच्चों के बच्चों के संग भी जीवन का भरपूर आनंद लिया। उनकी तीन पुत्रियां श्रीमती वंदना श्रीवास्तव, श्रीमती विभूति खरे, श्रीमती विभा निगम एवं एक पुत्र विवेक रंजन श्रीवास्तव हैं।

देशाटन और दुनियाँ में अनेक देशों का पर्यटन किया।

उन्हें भारतीय अनुवाद परिषद के शीर्ष सम्मान, मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी से तथा कई संस्थाओं से सम्मानित किया गया। वे केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य थे। उन्होंने गीता को जिया।

- विवेक रंजन श्रीवास्तव, भोपाल

ई-अभिव्यक्ति के नियमित वरिष्ठ रचनाकार गुरुवर प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी के रूप में मैंने अपनी माध्यमिक शिक्षा के समय के अपने प्रथम प्राचार्य (केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक १ जबलपुर) को खो दिया।

विगत ९९ वर्ष के जीवन काल के उनके स्वजन - मित्रगण भाई श्री विवेक रंजन जी के परिवार के साथ इस दुखद घडी के सहभागी हैं।

जैसे ही भाई श्री विवेक रंजन जी द्वारा उनके अवसान की सूचना फेसबुक सहित सोशल मीडिया पर डाली गई तो 300 से अधिक लोगों ने प्रतिक्रिया में संवेदनाये व्यक्त की। अनेक लोगों ने व्हाट्सअप पर सीधे प्रतिक्रिया की। सोशल मीडिया से प्राप्त कुछ प्रतिक्रियाएं हम आपसे साझा करने का प्रयास कर रहे हैं।

- हेमन्त बावनकर, पुणे

आपसे एक माह पूर्व आशीर्वाद प्राप्त किया था, प्रो0 साहब आपको विनम्र श्रद्धांजलि एवं सादर नमन।

- इंजी ब्रिजेंद्र शंखवार

वेमिशाल जीवनचर्या पूर्ण कर देवलोक गमन हेतु सादर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं आपके साहित्य में छिपे संदेशों से बहुत कुछ सीखने को मिला है। आपकी स्मृति सदा जीवंत रहेगी।

- प्रभा विश्वकर्मा शील

अत्यंत दुःखद समाचार.

स्व प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध के विपुल साहित्य पर अब शोध कार्य होने आवश्यक हैं

वे आत्म प्रवंचना मुक्त, छायावादी , छंद बद्ध काव्य रचना करने वाले महान कवि थे । 🙏

- इंजी रवींद्र गर्ग

विदग्ध जी, एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिनका मन निर्मल और जीवन पारदर्शी रहा।

वर्तमान स्वयं को स्थापित करने वाले समय में, वे इस प्रवृति से दूर रहे । उनका साहित्य ही उनको स्थापित कर रहा है। सादर विनम्र श्रद्धांजलि 🙏

- राजेश पाठक प्रवीण

प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी जहां भी रहे उन्होंने प्रेरक महान जीवन जिया । उनकी देश भक्ति भाव की कविताएं, आध्यात्मिक गीत, और लेखन पीढ़ियों को शिक्षा देती रहेंगी । विनम्र श्रद्धांजलि

- लक्ष्मी सिंग

मैंने भी बाबूजी को बहुत करीब से देखा है। बहुत अच्छे साहित्यकार थे। अब भी रेडियो पर जब सुबह सुबह उनके चिंतन की रिकॉर्डिंग सुनने मिलती है,मन भावुक हो जाता है। उनके प्रेरक विचार सबके लिए पथ प्रदर्शन करते हैं।

- **सलमा खान**

कम ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें उनके जाने के बाद भी समाज याद करता है। प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव जी इसी प्रकार के बुद्धि जीवी महान विभूति थे।

- संजय वर्मा

नई दुनिया जबलपुर में रहते उनका साक्षात्कार करने का अवसर मिला था। वो स्मृतियां हमेशा जीवित रहेंगी। 🙏 🌺

- राम कृष्ण गौतम

उनका साहित्य अमर रहेगा । वे उनके शब्दों में चिर जीवी बने हुए हैं।

- समीक्षा तैलंग

शरीर की अपनी यात्रा होती है, लेकिन उस यात्रा में जो महान कार्य किया है उन्होंने वो सदा याद किया जाता रहेगा, वे एक साहित्यकार ही नहीं थे बल्कि एक आध्यात्मिक व्यक्तित्व के भी धनी थे वो, एक वटवृक्ष की भांति उन्होंने दोनों को संरक्षण दिया था, ऐसे महान व्यक्तित्व को भाव भरी श्रद्धांजलि

- अशोक श्रीवास्तव

एक शानदार मिलनसार व्यक्तित्व का अवसान बहुत दुखद है. वे जितना हिंदी में सिद्ध हस्त थे , उनकी गजले बताती हैं कि वे उर्दु में भी वैसे ही पारंगत थे । उन्हें उर्दू साहित्य अकादमी, भोपाल ने सम्मानित भी किया था . विनम्र श्रद्धांजलि

- **युनुस अदीब**

हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि उनके द्वारा रचित नर्मदाजी की स्तुति को रिकॉर्ड करने का अवसर मिला। उनका आशीर्वाद सदैव अनुभव करते हैं, करते रहेंगे। 🙏🏻

- प्रशांत सेठ

भावपूर्ण विनम्र श्रद्धांजलि। बाबू जी का जीवन सादगी एवं विद्वत्ता की मिसाल था। शिक्षक पिता एवं कवि लेखक के रूप में उनकी यादें सदैव हृदय पटेल पर अंकित रहेगी। ईश्वर उनकी आत्मा को परम गति प्रदान करे। उनका जाना एक युग का अंत है।

- **पीयूष खरे**

केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1जबलपुर के संस्थापक प्राचार्य के रूप में उनकी यादें अक्षुण्य हैं।

वे प्रतिवर्ष मेधावी बच्चों को व्यक्तिगत रूप से पुरस्कृत भी करते रहे ।

हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह श्रद्धेय सर की दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्रदान कर केंद्रीय विद्यालय परिवार को उनसे प्रेरणा लेने का सामर्थ्य दें।

- **निखिलेश निगम**

संस्कारधानी जबलपुर भी उनकी साहित्यिक कर्म भूमि रही है ऐसे ऊर्जावान साहित्य मनीषी का देवलोकगमन सभी साहित्य प्रेमियों को व्यथित कर गया था। श्रीजानकीरमण परिवार से वे निरंतर जुड़े हुए थे।

- **डॉ अभिजात कृष्ण त्रिपाठी**

ऐसे विद्वान का अवसान समाज के लिए भी बड़ी क्षति है।

- **शक्ति तिवारी**

हम खुशकिस्मत हैं आदरणीय बाबूजी का सानिध्य मिला। सदैव ऊर्जा, सकारात्मक विचारों और रचनात्मकता से ओत-प्रोत रहे। भावपूर्ण श्रद्धांजलि

- **दीपक मालवीय**

सादर श्रद्धांजलि! उन्होंने पूरी जिंदगी स्वस्थ और सक्रिय रहकर जी, सादर नमन!

- **हरी जोशी**

बाबूजी का सानिध्य मुझे भी मिला है. जब विवेक सर एम पी ई बी रामपुर मे बॉलीबाल ग्राउंड के सामने रहते थे, मैं सुबह टाइम कल्याण भवन के सामने से ऑफिस जाता था औऱ रास्ते मे उनके दर्शन हो जाते थे तो मैं स्कूटर रोककर उनके चरण छू लेता था.

- मोहन श्रीवास

कैंद्रीय विद्यालय क्र-1 में हमने उनसे अनुशासन का पाठ पढ़ा। जो आज भी जीवन का पाथेय है।

- अनिल गर्ग

उनकी पुण्य तिथि पर हम सबका उन्हें याद करना उनकी महानता प्रमाणित करता है।

- अनिल कुमार लखेरा

कष्टदायक जीवन से बहुत श्रेष्ठ है भवसागर पार कर शांतिपूर्ण देहावसान कर परमेश्वर की प्राप्ति। जब सी बी साहब लगभग चालीस वर्ष के रहे होंगे तब से उनसे परिचय हुआ था नितांत शांत व्यक्तित्व सदा रचनात्मक कार्य में लगे रहना। जबलपुर के प्रांतीय शिक्षण महाविद्यालय से जब वे शनिवार रविवार अपने आवास पर मंडला आते तो सौभाग्य वश हम सामने ही रहते तो उन्हें प्रति बागवानी में व्यस्त देखते। अपने बच्चों के साथ मेरी बेटियों से भी अत्यंत मधुर और शिक्षाप्रद व्यवहार रहता था। सच मुच एक एक पल भीष्म पितामह का जीवन जीकर सार्थक किया उन्होंने। परिवार भी उनका उनके ही सम था। उनकी माताजी उनकी पत्नी स्व. दयावती जी हमारी शाला की प्राचार्य पुत्रियां उनकी बहू कल्पना जी सभी परिचित अपने मधुर व्यवहार से ह्रदय जीतने वाले। पुत्र श्री विवेक रंजनजी को तो समस्त साहित्य जगत बहुत अच्छे से जानता ही है मैं क्या कहूं। एक सुपुत्र जिसकी जगत आकांक्षा करता है वे है। वे उनके साहित्य को अब सबके पास निरंतर पहुंचा रहे हैं 🙏

- नीलम भटनागर

श्री विदग्ध जी का जन्म सन छब्बीस है निश्चय ही उन्नीस सौ। क्योंकि क्रूर काल ने दो हजार का छब्बीस तो आने नहीं दिया। तो उनकी माताजी बताती थीं कि उस साल मंडला जो कि उनका जन्मस्थान है में नर्मदा मैया में भयानक बाढ आई थी। आमजन जीवन अत्यंत त्रस्त था। रहने और भोजन का बहुत अभाव ऐसे में कुछ दयालु जन ने अपने निवास पर लोगों को आश्रय दिया।

उनमें से विदग्ध जी के पिता और दादा ने भी यह उपकारी कार्य किया। उन के घर को तत्कालीन कलेक्टर साहब ने महलात नाम दिया जो इनके घर पर पट्टिका के रूप में लगा था। एक महलात और तो मैं जानती हूं वह वल्लभजी ओझा का घर था जो मंडला के बडे दानदाता और विधायक रहे। बाद में उनकी सुयोग्य बहू श्रीमती नारायणी देवी झा शायद तीन चार टर्म की विधायिका रहीं। वे भी अत्यंत लोकप्रिय थीं। मंडला आदिवासी बहुत पुरातन जिला क्षेत्र फल के हिसाब से बहुत विस्तृत जिला था। अमरकंटक से आती मां नर्मदा ने इसे तीन ओर से घेरा हुआ है। अतिप्रसिद्ध तीर्थ स्थल है।

जो आज कायस्थ जन को चित्रांश नाम से नया नाम कहते हैं वे समझ लें कि इनका नाम तब श्री चित्र भूषण श्रीवास्तव रखा गया जिसे उनने सार्थक किया अगाध साहित्य के रचयिता और अनुवादक रहे सी बी साहब की एक सहज सरल भूषण पर लिखी कविता यहां उनको भावाजलि के रूप में प्रस्तुत कर रही हूं जो उनके राष्ट्र प्रेम को व्यक्त करती है। -

*

यही हमारी. भारत माता।

जिसका. प्यार हमें हर्षाता।।

*

बडे सुहाने सांझ सकारे।

सूरजचांद चमकते तारे।।

कषक श्रमिकसैनिक व्यापारी।

कलाकार रक्षक व्यापारी।।

सब धार्मिक निश्छलसद्ज्ञानी।

ज्यों निर्मल गंगा का पानी।

युग युगे है इनका नारा।

प्रेम आपसी भाई चारा।।

नील गगन धरती कल्याणी।

सुफल उर्वरा अनुपम दानी।।

जनता अधिक गांव में बसती।

उत्सव प्रिय संस्कृति जिनकी।।

शहरों में पर रोज़गार है।

दिल्लीदिल है कण्ठ हार है।।

विश्व गगन का उज्वलतारा।

ऐसा अनुपम देह हमारा।।

यह कविता उनके स्वच्छ पावन हृदय का दर्पण है। शायद अपने विद्यार्थी जीवन में लिखी थी जो मंडला के जनजीवन में बहुत लोकप्रिय थी। उन के संगी साथी जो अब बहुत कम ही होंगे उनके विषय में बहुत कुछ लिखेंगे पर मेरी जानकारी एक और महत्वपूर्ण घटना है वह है अंग्रेजों द्वारा स्वाधीनता सैनानियों पर बीच चौक पर गोली चालन है जिसमें प्रसिद्ध श्री उदयचंद जी की मृत्यु हुई उस समूह में जो छात्र गण थे उसमें भी श्री सी. बी. भाई साहब थे। मेरा तात्पर्य महज यह याद दिलाना है कि उदयचंदजी भी शायद तब न मारे जाते तो अभी भी अपने परिवार में होते।

- मीना जौहरी

भावपूर्ण श्रद्धांजलि आज उनके लिए जो लिखा है उसे पढ़कर बहुत सी यादें ताजा हो गई वे एक बार स्काउट गाइड का और एक बार फनीचर का आडिट करने आये थे तो देखते हुए बोले अरे तुम्हारा क्या देखे ठीक होगा लाओ साइन कर देते हैं सब याद आ रहा है।

- रंजना मिश्रा

प्रिय साथियों, आज आ. विवेक रंजन जी के पिताजी के असामयिक निधन पर मंच पर अवकाश रखा गया था।

इस दुखद घड़ी में हम सब विवेक रंजन जी के साथ हैं।

ईश्वर पिताजी की आत्मा को शांति प्रदान करे।

उनका साहित्य अमर रहेगा।

- मधूलिका श्रीवास्तव, गद्य प्रवाह मंच

श्री विदग्ध जी की एक पुस्तक ईश आराधना जो मंडला में उन्होंने मुझे सप्रेम भेंट की थी, आज भी मेरी बुक शेल्फ में सुरक्षित रखी हैं। ईश्वर ऐसी महान विभूति को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। उनके हर गीत सर्व जन मंगल कामना लिए होते थे।

- कमल चंद्रा

हमें पूर्ण विश्वास है कि पूजनीय पापा जी बैकुंठ धाम से आपको देखकर गर्वित महसूस कर रहे होंगे कि उन्हें इस कलयुग में भी आपके जैसा श्रवण कुमार प्राप्त हुआ। आप और सुषमा दीदी परिवार के उच्च संस्कारों के उत्तम उदाहरण है।

- श्वेता और तरुण

विवेक जी,आपके साथ ही वे मेरे पिताजी से मिलने घर आते थे। दृश्य जीवंत हैं।

- हर्ष वर्धन व्यास

विवेक जी !

आप सचमुच भाग्यशाली हैं। इतने वर्षों तक पिता की छत्र छाया जिसे नसीब हो उस पर साक्षात् प्रभु की अनुकम्पा ही बरसती है। अपनों का बिछोह कष्टदायी होता है। मनुष्य बड़ा ही स्वार्थी जीव है। बिछुड़ना नहीं चाहता किन्तु यही शाश्वत सत्य है।

ईश्वर हमेशा आपके साथ रहे आप भी पिता श्री के सिखाए आदर्शों पर चल कर शिखर तक पहुँचें, यही ईश्वर से प्रार्थना है। शतायु से कुछ समय पूर्व निधन शतायु होने का ही संकेत है।

- दुर्गा सिन्हा

आप के पूरे परिवार पर ईश्वर की असीम अनुकंपा रही है, आप सभी भाई बहनों को ऐसे विद्वान विदूषी, कर्मठ और ईमानदार माता पिता प्राप्त हुए। पिता का निधन अपूरणीय क्षति है। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उन्हें सदा याद किया जाएगा।

- राजीव कर्महे

प्रिय भाई विवेक, पिताजी के अवसान की पुण्य तिथि पर उनका साहित्य उनकी स्मृति बनकर हमारे सामने है। पुण्य स्मरण

- परमानंद सिंहा

श्री विवेक रंजन जी, प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव जी हमारे प्रथम प्रधान अध्यापक थे। उनके निधन से मैंने एक गुरू, पथ प्रर्दशक और एक अभिभावक को खो दिया। मैं उनके श्री चरणों में अपना प्रणाम अर्पित करता हूं ।

- अनूप बोस

1969 पास आउट केंद्रीय विद्यालय क्रमांक एक जबलपुर

Dear Mr Vivek Ranjan Shrivastava ji...

Respected Guru Ji Professor C B Shrivastava Ji was our first principal, we have learned a lot from his life and simplicity

- **Avinash Goel & Family**, Bangalore

साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई थी प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव जी के निधन से। वारासिवनी, बालाघाट भी उनकी कर्मस्थली रहा है।

- अशोक सिंहासने, बालाघाट

Babbaji lived 99 years with dignity, curiosity, a sharp and beautiful mind. But the quality of his life, the peace he had in his final days and the love he left with all of that was because of you. Your devotion, your patience and the way you put his needs above your own every single day is something I will carry with me forever.

Both of you have dedicated your lives to honouring him. He was truly a fortunate man.

In the quiet, often unseen moments adjusting his body, preparing his food, anticipating even the smallest needs you gave him a kind of care that few people in this world ever receive. And even at the very end, he wasn't alone. He left in peace, held by the love of the two people who never left his side.

We will carry the lessons he gave us within us and pass them on to the generations that follow. He was endlessly curious, always eager to learn more about the world. He had clarity of thought, emotional control, and a deep hunger for knowledge. These are truly rare traits that I aspire to take forward from him.

Thank you for giving him such a beautiful life. And thank you for showing me what it truly selfless service means. I can't imagine another soul as lucky as him or other children as self-sacrificing and noble as you both. I love you both so much.

- Anubha, London

ब्रम्हलीन आदरणीय प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव का देवलोक गमन शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र की अपूरणीय क्षति है। गरिमामय और सम्माननीय जीवन यात्रा पूरी कर अत्यंत सक्रिय और क्रियाशील स्थिति में स्वर्गारोहण भाग्यशाली व्यक्तियों को ही मिलता है। आदरणीय श्रीवास्तव साहब ऐसे ही परम भाग्यशाली थे।

अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्रख्यात साहित्यकार अपने पुत्र श्री विवेक रंजन जी श्रीवास्तव को अपना उत्तराधिकार सौंप गए है। ऐसे महामना को ईश्वर मोक्ष प्रदान कर अपने चरणों में स्थान दे और श्रीवास्तव परिवार को इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

- **डॉ प्रो जे सी श्रीवास्तव**

२५ जुलाई २०२५

प्रिय विवेक रंजन, स्नेह, आप भाग्यशाली बेटे हैं कि आपको आपके पिताश्री पूजनीय चित्र भूषण जी अपनी उम्र के ९९ वर्ष तक रोज आशीर्वाद देते रहे. उनके मार्गदर्शन के umbrella में आपने उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त की. उनके निधन से अब एक बड़ा vaccume create हो गया है. मुझे लगता है - आप आज से बड़े हो गए हैं. पिता के रहते हम बड़े होते नहीं हैं. उनके दुलार प्रेम अनुशासन में बच्चे ही बने रहते हैं.

आदरणीय भाई साहब श्री चित्र भूषण जी से मेरा परिचय आधी सदी का है, मैंने उन्हें विभिन्न पदों पर निष्ठा, ईमानदारी, कर्मठता, एवं पारदर्शी कार्य प्रणाली से कार्य करते देखा है, मैं DPI Office में रहा. वे भोपाल आने पर पहले मुझसे मिलने मेरे घर आते रहे हैं. मुझे उनका स्नेह मिलता रहा. हम साहित्यिक विषयों पर भी चर्चा करते थे. विलक्षण प्रतिभा से उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में प्राय सभी विधाओं पर लेखन कर प्रतिष्ठा प्राप्त की. मैं उनकी स्मृति को प्रणाम करता हूँ.

- **महेश सक्सेना**

ई-अभिव्यक्ति परिवार की ओर से स्मृति शेष स्मृतिशेष प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध जी को विनम्र श्रद्धांजलि

☆☆☆☆

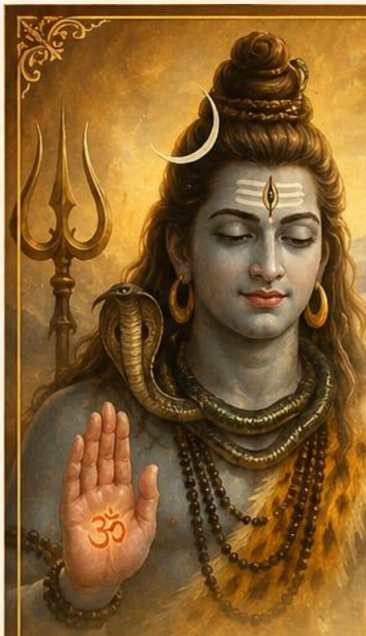

ॐ

ॐ नमः शिवाय

शिव विश्व में सब शुभ करें

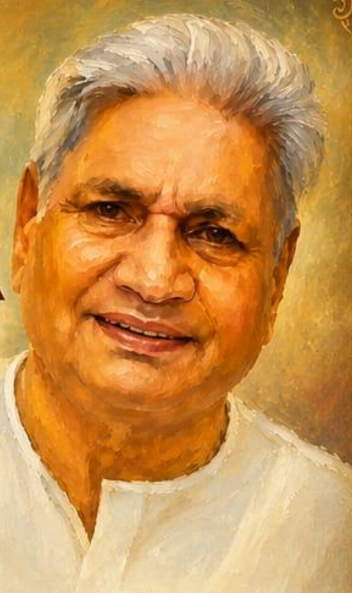

स्व
प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव
विदग्ध, भोपाल

1
हे सदा शिव शंभु शंकर, दुखहरण मंगल करण
सुख, विभव, आनन्द दायक, शान्तिप्रद प्रभु तवचरण ॥
कामना तव कृपा की ले नाथ हम आये शरण
आशुतोष अपारदानी कीजिये सब दुख हरण ॥ 1॥

2
हृदय की सब जानते हो भक्त के भगवान तुम
तुम्हीं संरक्षक जगत के प्राणियों के प्राण तुम ॥
विधि न मालूम अर्चना की भावना के हैं सुमन सेह
आलोकित हृदय है. धवल हिम सा शुद्ध मन ॥ 21

3
तमावृत हर पथ जगत का मोह के अंधियार से
बढ़ रहे हैं कष्ट नित नव स्वार्थ के विस्तार से ॥
है भयावह रात काली, कहीं न दिखती किरण
तव कृपा की कामना ले हैं बिछे पथ में नयन ॥ 3 ॥

4
दीजिये वर "कल" बने सत्यं शिवं शुभ सुन्दरमू
मन में करुणा का उदय हो, क्लेश, प्रभु हो जायें कम ॥
अश्रु जल कर सकें उठती द्वेष लपटों का शमन
विनत तव चरणों में शंकर हमारा शत् शत् ममन ॥ 4 ॥

स्व प्रो चित्र भूषण श्रीवास्तव विदग्ध

प्रेषक : विवेक रंजन श्रीवास्तव (पुत्र)
मो 7000375798
भोपाल म प्र 462023

23 मार्च 1927 – 25 जुलाई 2025

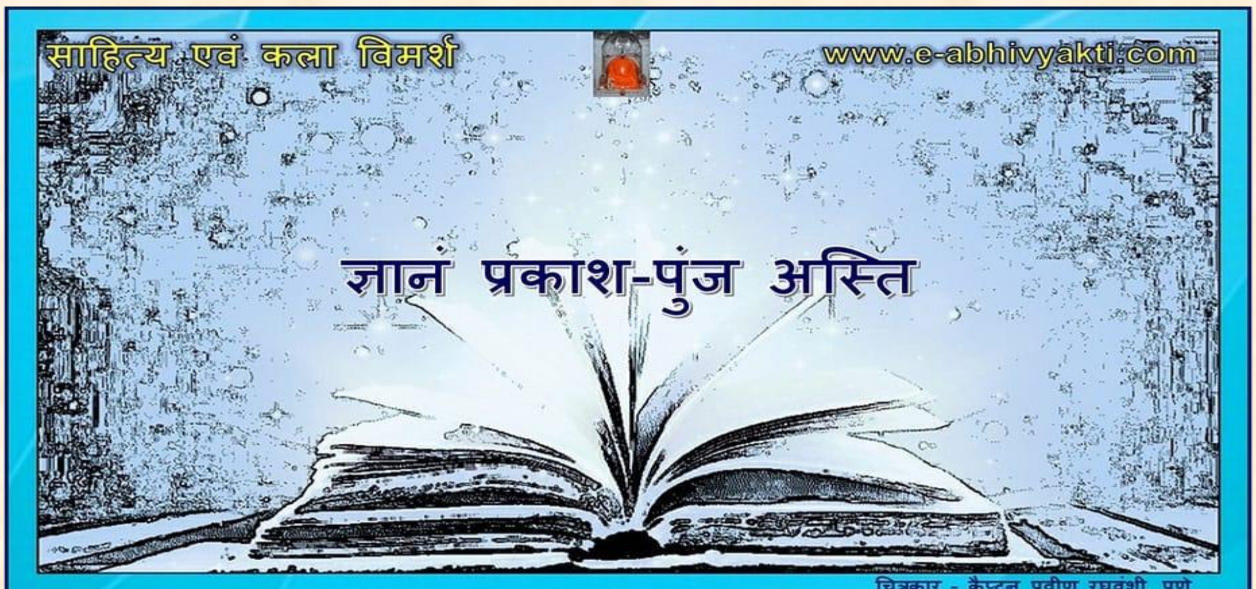

सम्पादक मण्डल

हिन्दी - श्री विवेक रंजन श्रीवास्तव

अङ्ग्रेज़ी - कैप्टन प्रवीण रघुवंशी (नौसेना मैडल), पुणे

मराठी - सौ. उज्ज्वला केळकर, श्री सुहास रघुनाथ पंडित, सौ. मंजुषा मुळे, सौ. गौरी गाडेकर

अंतरराष्ट्रीय साहित्य एवं संस्कृति - डॉ राधिका पवार बावनकर, बाम्बेर्ग (जर्मनी)

सम्पादक

श्री हेमन्त बावनकर, पुणे